वैष्णो देवी

तथा

नौ देवीयों की अमर कहानी



जन्म कथा श्री वैष्णों देवी
और
नौ देवियों की पूरी कहानी



संग्रहकर्ता :

बालकृष्ण शर्मा

●

प्रकाशक—



भवानी पुस्तक महल

कटरा वैष्णो देवी,

जम्मू-182301

मूल्य १५) रुपये

प्रकाशक—
भवानी पुस्तक महल,
कटरा वैष्णों देवी (जम्मू)

संग्रहकर्ता—
बालकृष्णा शर्मा

मूल्य
१५) रु०

मुद्रक— कौशिक ऑफसैट, मौजपुर, दिल्ली-53

माता वैष्णव देवी की महिमा

संकट हरने वाली, सब सुखों की दाती, माता वैष्णों देवी की महिमा ही सबसे न्यारी है। मां की महिमा का जितना भी व्याख्यान किया जाए वह भी कम है। मां वैष्णों दुखियों के दुख हरती हैं। अपने भक्तों के समस्त कष्टों का निवारण करती हैं। माता वैष्णों देवी के सम्मुख जो भी भक्त सच्चे हृदय से मनोकामना करता है, मां उसकी मनोकामना को पूर्ण करती है।

मां नेत्रहीन को नेत्र, अंग हीन को अंग, बल हीन को बल, धन हीन को धन, सन्तान हीन को सन्तान व अपने भक्तों की हर तरह से इच्छा पूर्ण करती है।

मां शेरां वाली का दरबार भक्तों के लिए आठों पहर चौबीस घण्टे, हर क्षण प्रत्येक भक्त के लिए खुला रहता है। मां अपने भक्तों के हृदय में हर क्षण खुशियां भर देती हैं।

अष्ट भुजा धारी मां की शेर पर सुसज्जित सवारी की कल्पना मात्र से ही हर भक्त का मस्तक नत हो जाता है तथा उसके हृदय से एक ही आवाज गूंज उठती है, वह है—'जय माता की।'

माता वैष्णव देवी की उत्पत्ति

सहस्रों वर्ष पूर्व जब देवलोक व पृथ्वी पर राक्षसों का पूर्ण अधिकार हो गया था। देवता व समस्त जनता अत्याचारों से दुखी थे। चारों ओर त्राहि-त्राहि मची हुई थी, राक्षस मांस मदिरा का सेवन करते फिरते थे। ऋषि मुनियों की तपस्या को भंग करते थे। समस्त भू-लोक पर मानव का जीवन दुश्वार हो गया था।

उन्हीं दिनों दो विचित्र राक्षस और उत्पन्न हुए जिनके नाम रम्भ और कर्म थे वे दोनों सगे भाई थे, उनमें कुछ राक्षस प्रवृति कम थी। ये दोनों भाई तीनों लोकों में अपना राज्य स्थापित करना चाहते थे।

राज्य स्थापित करने हेतु रम्भ व कर्म दिन रात तपस्या में लीन रहने लगे। उनकी तपस्या को देखकर ब्रह्मा जी का सिंहासन भी डोलने लगा। राक्षस चाहे कितना ही सत्य काय वाला हो वह अपनी राक्षस प्रवृति को नहीं छोड़ सकता। यह विचार कर ब्रह्मा जी ने राजा इन्द्र को रम्भ और कर्म की तपस्या को भंग करने के लिए भेजा।

राजा इन्द्र एक ब्राह्मण का रूप धारण कर रम्भ और कर्म के तपस्या स्थल के पास पहुँचे। यहां उन्होंने चारों

और मांस मदिरा भक्षण किए राक्षसों के समूह देखे। कई जगह तो राक्षस अपने तेज नाखूनों से मनुष्य को फाड़कर उनके रक्त को पी रहे थे, अचानक महाराज इन्द्र ने सुना कि राक्षस लोग आज अत्यन्त हर्षित हैं क्योंकि कल रम्भ और कर्म की तपस्या पूर्ण हो जाएगी तथा स्वयं ब्रह्मा जी को उन्हें वरदान देने के लिए आना पड़ेगा तथा रम्भ व कर्म वरदान में तीनों लोकों का राज्य मांग लेंगे। हमारी जीत होगी, देवता जंगलों में छुपते फिरेंगे। मांस मदिरा की कोई कमी न रहेगी।

यह सुनकर महाराजा इन्द्र अत्यन्त क्रोधित हो गए जिससे समस्त संसार में ऐसा लगता था जैसे भयंकर भूचाल आ गया। नदियों के रास्ते बदल गए। अनेकों वृक्ष गिर गए व समस्त दिशाओं में त्राहि-त्राहि मच गई।

महाराज इन्द्र रम्भ व कर्म को देखकर आश्चर्य-चकित हो गए। क्योंकि रम्भ और कर्म इन सबसे बेखबर अपनी तपस्या में लीन थे। यह देख इन्द्र देव अत्यन्त घबरा उठे तथा उन्होंने ब्रह्माजी का स्मरण कर अपना सुदर्शन चक्र तपस्या स्थल की ओर छोड़ दिया। सुदर्शन चक्र ने स्थल के तीन चक्कर लिए तथा चौथे चक्कर के

प्रारम्भ में ही कर्म का शीश धड़ से अलग कर दिया। वह तपस्या स्थल पर हवन कुण्ड में जा गिरा।

इन्द्रदेव के अन्तर्ध्यान होने से पूर्व मांस की सड़न से रम्भ की तपस्या भंग हो गई तथा उसने अन्तर्ध्यान होते हुए इन्द्रदेव को भी देख लिया। रम्भ राक्षस होते हुए भी शांतचित प्रवृति का था परन्तु कर्म तो इसके ठीक विपरीत सिर्फ राक्षस प्रवृति का था।

रम्भ अपने भाई कर्म की मृत्यु से अत्यन्त दुखी हो उठा और उसने उसी यज्ञ कुण्ड में जान देने की ठान ली। अग्निदेव ने यह देखकर सोचा कि एक अनर्थ तो हो चुका। वह पापी अनजाने में ही स्वर्ग को प्राप्त हो चुका। वहां न जाने देवताओं पर कितने जुल्म करेगा। यदि रम्भ ने भी यज्ञ कुण्ड में शीश चढ़ा दिया तो यह दूसरा अनर्थ हो जायेगा।

इसलिए अग्निदेव रम्भ के सम्मुख आकर बोले, 'मूर्ख यह क्या कर रहा है? आत्म-हत्या करना घोर पाप है।'

वह बोला—प्रभु! आपसे क्या छिपा है। मेरे भाई का इसी यज्ञ स्थल पर स्वयं इन्द्रदेव ने वध किया है तथा वे लोप हो चुके हैं। मेरे कोई सन्तान भी नहीं है अतः

मेरा जीवन बेकार है। आप मेरे इस कष्ट का कोई निवारण बताओ।

अग्नि देव बोले—तुम्हें आज से ठीक नौ माह पश्चात् एक पुत्र की प्राप्ति होगी। इससे तुम्हारे इस दुख का निवारण हो जायेगा।

अग्नि देव द्वारा पुत्र प्राप्ति के वरदान को सुन रम्भ अपने भाई की मृत्यु के दुःख को भूल गया। उसने इस यज्ञ की समाप्ति की घोषणा कर दी। इस प्रकार समस्त देवताओं ने इस संकट से मुक्त होते देख राहत की सांस ली।

ठीक नौ माह के पश्चात् अग्नि देव के वरदान के अनुसार रम्भ को एक पुत्र की प्राप्ति हुई। उसने उसका नाम महिषासुर रखा।

महिषासुर वध—

राक्षस पुत्र महिषासुर समय की गति के साथ २ बड़ा होता गया राक्षसी प्रवृति के अनुसार क्रूरता व अमानुष्यता तो उसकी रग-रग में समाई थी। परन्तु इन बातों के विपरीत वह अत्यन्त भक्तिवान भी था।

उसके मन में अपने पिता के अनुरूप यह इच्छा भी थी कि वह तीनों लोकों में राज्य करे। अपनी इस इच्छा

के अनुकूल वह अनेकों वर्षों तक तपस्या में लीन रहा। उसकी इस अनन्य भक्ति पूर्ण भावना के पीछे सिर्फ ब्रह्मा जी द्वारा वरदान प्राप्ति करना था ताकि वह समस्त लोकों में अपना राज्य स्थापित कर सके और देवताओं का सर्वनाश कर सके।

ब्रह्मा जी उसकी निरन्तर कठोर तपस्या से बहुत प्रभावित हुए तथा महिषासुर के सम्मुख उपस्थित हो उससे वरदान मांगने के लिए कहा।

ब्रह्मा जी के मुख से इस वचन को सुन महिषासुर हर्ष से झूम उठा। उसने पूर्ण सूझ बूझ के साथ ब्रह्मा जी से हाथ जोड़कर कहा, 'हे भगवान अगर आपकी यह इच्छा है तो मुझे यह शक्ति दो जिससे अपना शरीर इच्छानुसार विस्तार, फैलाव सूक्ष्म व रूप बदल सकूं और मुझे कोई नहीं मार सके।

राक्षस चाहे कितना ही धर्म वृत्ति वाला हो उसकी आत्मा शुद्ध नहीं होती। अब ब्रह्मा जी को इस बात का अहसास हुआ कि उन्होंने महिषासुर को वरदान मांगने की अनुमति देकर कितना अनुचित किया। पर जो कह दिया वो अटल है इसलिए ब्रह्मा जी ने कहा, मूर्ख जिस

प्राणी ने इस संसार में जन्म लिया है। उसको तो अवश्य मृत्यु प्राप्त होती है। अतः और कुछ सोच विचार के मांग।

महिषासुर ने ब्रह्मा जी से कहा—हे भगवान अगर आप अपनी वरदान देने की बात से इन्कार करते हैं तो मुझे यह वरदान देने की कृपा करें कि मेरी मृत्यु किसी कुंवारी (कन्या) के हाथ से हो।

'तथास्तु' कहकर ब्रह्मा जी अन्तर्धान हो गये।

श्री ब्रह्मा जी से वरदान प्राप्त होने के पश्चात् महिषासुर हर्ष से विभोर हो उठा। समस्त राक्षसों के हर्ष का ठिकाना न रहा। वे खुशी से झूम उठे।

जब समस्त देवताओं में भी इतनी शक्ति न रहेगी कि वो मेरे से युद्ध में लोहा ले सकें तो एक स्त्री में ही इतनी शक्ति कहां से आएगी जिससे वह मुझे पराजित कर सके। अब तो समस्त भू-लोक, देवलोक में मेरा राज्य होगा। देवता घोर जंगलों में मृत्यु के डर से मुंह छिपाते फिरेंगे। यह सोचकर महिषासुर ने भू-लोक वासियों तथा समस्त देवताओं पर अत्याचार करने शुरू कर दिए।

अनेक स्थानों पर युद्ध शुरू हो गए। देवता पराजित होने लगे। स्वयं महाराज इन्द्र की सेना जिसमें करोड़ों

हाथी, लाखों रथ, करोड़ों योद्धा थे। अनेकों देवतागण भी सम्मिलित थे महिषासुर द्वारा संचालित इस युद्ध से घबरा उठे।

श्री ब्रह्मा जी से वरदान प्राप्त महिषासुर सबके लिये घोर संकट था। वह कभी तो अत्यन्त सूक्ष्म रूप धारण कर लेता तो कभी किसी अजगर का।

इन्द्र के बहादुर योद्धा इस दृश्य को देखकर अति क्रोधित हो उठते तथा पूर्ण साहस के साथ फिर युद्ध में संलग्न हो जाते अनेकों स्थानों पर महाराज इन्द्र पराजित हुए।

सौ वर्षों तक भगवान इन्द्र व महिषासुर में युद्ध चलता रहा। जिसमें समस्त राक्षस मौत के ग्रास बने। परन्तु महिषासुर की मृत्यु नहीं हो सकी।

महिषासुर जिसे ब्रह्मा जी से किसी कन्या के हाथों मृत्यु का वरदान प्राप्त था। अनेकों रूप बदल २ कर इन्द्रदेव से युद्ध करता रहा। भगवान इन्द्र व समस्त योद्धा उसकी इस दानव लीला से बहुत दुखी थे।

अपनी सेना का इस तरह निसंहार होते देख इन्द्र देव विभोर हो उठे तथा उन्होंने युद्ध में अपनी पराजय

स्वीकार कर लोप हो गए महिषासुर भगवान इन्द्र के सिंहासन पर विराजमान हो गए।

श्रीब्रह्मा जी इस युद्ध तथा महिषासुर के घोर अत्याचारों से अन्जान न थे। वे कर भी क्या सकते थे क्योंकि उन्होंने स्वयं महिषासुर को वरदान दिया था।

हार कर समस्त देवता इन्द्र के साथ श्री ब्रह्मा जी के पास गए तथा उन्होंने अपनी करुणा गाथा सुनाई। भगवान इन्द्र ने अपनी तथा समस्त देवताओं की राक्षस महिषासुर से रक्षा की प्रार्थना की तथा महिषासुर की इस विनाशी लीला के अन्त के लिए भी प्रार्थना की।

श्री ब्रह्मा जी महिषासुर की इस विनाशी लीला से अन्जान न थे तथा उन्हें इस बात का अहसास भी हो गया कि एक दुराचारी मनुष्य को वरदान देकर कितना अनुचित किया। श्री ब्रह्मा जी ने समस्त देवताओं से कहा, मैं तुम्हारे इस दुख निवारण में कोई सहायता नहीं कर सकता। तुम मेरे साथ शंकर जी के पास चलो। वे ही तुम्हारे इस संकट के निवारण का कोई उपाय बतायेंगे। सारे देवता शंकरजी का ध्यान कर प्रार्थना करने लगे।

देवताओं के तेज से शहाशक्ति का उत्पन्न होना

देवताओं की इस करुणा गाथा को सुनकर भगवान शंकर जी के मस्तक से बिजली कड़कने लगी। क्रोध के कारण मुख से एक महान् शक्तिशाली तेज प्रकट हुआ। श्री ब्रह्मा जी के क्रोधित शरीर से भी इसी प्रकार का तेज निकला। जब समस्त देवताओं के तेज एक ही स्थान पर एकत्रित हो गए तो समस्त संसार में ऐसा लगता था, जैसे रोशनी हो गई तथा उन सब तेजों के समह से महा-शक्ति ने जन्म लिया।

देवताओं के तेज से ही शहाशक्ति के विभिन्न अंग बने वह इस प्रकार है—

देवताओं के नाम	देवी के अङ्ग
शंकर	मुख
यमराज	केश
विष्णु	भुजायें
चन्द्रमा	स्तन
वरुण	जंघा

देवताओं के नाम	देवी के अङ्ग
पृथ्वी	नितम्ब
ब्रह्मा	चरण
सूर्य	दोनों पैर की अंगुलियां
वसु	दोनों हाथों की अंगुलियां
प्रजापति	दांत
अग्नि	दोनों नेत्र
संध्या	भौंहें
वायु	कान

तथा अन्य देवताओं के तेज से इस महान महाशक्ति के विभिन्न अंग बने।

तमाम देवता इस महाशक्ति के दर्शन मात्र से आत्म विभोर हो उठे तथा उस महाशक्ति को बारम्बार नमस्कार कर निम्न प्रकार के आभूषण आयुध व अनेक शोभा युक्त साज-सज्जा प्रदान की।

नाव	वस्तु
शिव	त्रिशूल
विष्णु	चक्र
वरुण	दिव्य शंख और पाश
अग्नि	शक्ति व बाण से भरे तरकश
इन्द्र	वज्र
यमराज	काल दण्ड.
प्रजापति	स्फटिक मणियों की माला
ब्रह्मा जी	कमण्डल
सूर्य	रोम कूपों में किरणे
समुद्र	उज्ज्वल हार, कभी न फटने वाले वस्त्र, चूड़ामणि, दो कुण्डल, हाथों के कंगन, दोनों भुजाओं के मयूर, पैरों के नूपुर, गले के लिए सुन्दर हंसली व सब उंगलियों में पहनने के लिए रत्न जड़ित अंगूठियां।

इस प्रकार समस्त देवताओं ने देवी को अनेक प्रकार के आयुधों से सुसज्जित किया तथा महिषासुर के वध की प्रार्थना की।

देवताओं की इस करूणा गाथा को सुनकर दुर्गा माता अत्यन्त क्रोधित हो उठीं और महाशक्ति ने क्रोध में आकर गर्जना की तो समस्त भू-मण्डल कांपने लगा। आकाश पर बिजली कड़कती प्रतीत होने लगी। यह देख सभी देवताओं ने संगठित स्वर से शक्ति की जय बोली।

जब महाशक्ति अपनी सवारी शेर पर बैठकर महा-पिशाच महिषासुर के वध के लिए प्रस्थान करने लगी तो सब देवताओं ने देवी को प्रणाम किया।

सारे भू-लोक पर भयंकर गर्जना तथा पृथ्वी से आकाश तक उथल-पुथल मची देखकर महिषासुर अत्यन्त आश्चर्य में पड़ गया। परन्तु जब उसने देखा कि एक स्त्री शेर पर सवार उसको मारने के लिए आ रही है।

देवी ने महिषासुर के समीप जाकर कहा। हे मूर्ख, तेरा अन्त आ गया है अगर अपना हित चाहता है तो यह दुष्ट कर्म छोड़कर नर्क भागी बन। इसी में तेरा कल्याण है।

महिषासुर महाशक्ति की यह कटु वाणी सुनकर बोला मुझे जब सारे देवता ही न हरा सके तो तू अबला मुझे

क्या मारेगी। सैंकड़ों वर्षों से मेरा तीनों लोकों में राज्य है। मेरे से पराज्य पाने के बाद सारे देवता दर-बदर की ठोकरें खाते छिपते फिर रहे हैं। मैंने जिस पर क्रोध किया उसे कोई नहीं बचा पाया।

महिषासुर की इस अभिमान पूर्ण वाणी को सुनकर महाशक्ति को क्रोध आ गया तथा देवी का रूप विकराल हो उठा सारा भू-मण्डल इस रूप को देखकर कांपने लगा महिषासुर भी इस विकराल रूप को देखकर मन ही मन यह सोचने लगा कि यह स्त्री है या काल।

परन्तु महिषासुर ने अपनी सेना व सेनापति चिक्षुर को भगवती से युद्ध करने की आज्ञा दी।

सेनापति चिक्षुर का हृदय कांपने लगा क्योंकि उसने देवी का विकराल रूप देखा था। उसने सेना के अधि-नायक असुर चामर को चतुरंगनी सेना के साथ रणभूमि में जाने की आज्ञा दी।

महिषासुर की चतुरंगनी सेना में एक करोड़ हाथी और पांच करोड़ राक्षस योद्धा थे। प्रयुत असुर नामक सेना का नायक जिसके अधियत्प में लाखों रथ, हाथी, घोड़े हथियार सहित रणभूमि में एकत्र हो गये।

इस सब सेनाओं के पीछे महिषासुर एक ऊंचे सिंहा-सन पर अनेकों शस्त्रों से सुसज्जित देवी से टक्कर लेने

के लिए विराजमान था एक ओर करोड़ों राक्षसों की सेना जो हर प्रकार के आयुधों से सुसज्जित थी तथा दूसरी ओर स्वयं महाशक्ति सिर्फ अपनी सवारी सिंह पर सवार समस्त देवता देवलोक से भगवती पर पुष्पों की वर्षा कर रहे थे।

देवताओं के द्वारा मां भगवती पर पुष्प वर्षा होती देखकर महिषासुर अत्यन्त क्रोधित हो उठा तथा अपने सेनापति चिक्षुर को युद्ध आरम्भ करने का आदेश दिया और सेनापति चिक्षुर ने दुन्दुभी बजाई उसी समय महाशक्ति ने अपने श्वांस से हजारों गण उत्पन्न कर दिये समस्त देवी के गण अनेकों शस्त्रों से सुसज्जित थे।

युद्ध आरम्भ हुआ।

स्वयं देवी अपने विकराल रूप में हाथ में त्रिशूल, गदा तथा तलवार से हजारों राक्षसों का विनाश करती हुई आगे बढ़ती गई।

अपनी सेना का यह हाल देखकर सेनापति चिक्षुर स्वयं भी घबरा उठा तथा उसने रणभूमि से भाग जाने की ठान ली। भगवती ने जब चिक्षुर को रणभूमि से भागते हुए देखा तो अपना त्रिशूल उसकी ओर फेंका त्रिशूल को अपनी ओर आते देखकर चिक्षुर अत्यन्त तेजी के साथ भागा।

परन्तु महाशक्ति द्वारा फेंका गया त्रिशूल का वार कहां खाली जा सकता था। देखते ही देखते त्रिशूल ने उसकी गर्दन को धड़ से अलग कर चिक्षुर की दानवी लीला का अन्त कर दिया।

अपने सेनापति चिक्षुर तथा लाखों सैनिकों को मृत्यु का ग्रास बनते देख महिषासुर क्रोधित हो उठा और वह भैंस का का रूप धारण कर रणक्षेत्र में आ गया।

महिषासुर का यह रूप देखकर भगवती अत्यन्त क्रोधित हो उठी तथा बोलीं—मूर्ख ! अब तेरी इस राक्षसी लीला का अन्त है।'

देवी की यह बात सुनकर महिषासुर खिलखिला कर हँस पड़ा और बोला 'तुझे तो मारने वाला इस लोक में पैदा ही नहीं हुआ, मैं अमर हूँ।'

महाशक्ति ने महिषासुर को ब्रह्मा जी द्वारा दिया वरदान स्मरण कराते हुए कहा मुझे शायद याद नहीं कि तेरी मृत्यु एक स्त्री के हाथ होगी, मैं वही स्त्री अवतार हूँ।

महाशक्ति के मुख से यह वचन सुन महिषासुर घबरा हट के साथ भैंसे के रूप में इधर-उधर तीव्र गति से भागने लगा। यह देखकर जगदम्बा क्रोधित हो उठी, उन्होंने उस पर पाश फेंका। पाश से बंधते ही महिषासुर भैंसे का रूप छोड़ महादैत्य के रूप में परिवर्तित करने वाला ही

था कि देवी ने उसका कण्ठ अपने पांव से दबाते हुए त्रिशूल का प्रहार कर दिया। अभी वह आधा ही रूप बदल सका था कि देवी ने तलवार से उसका शीश अलग कर डाला।

अपने महाराजा दैत्य महिषासुर का अन्त होता देख शेष सभी दैत्य रण छोड़कर भाग खड़े हुए।

महिषासुर को मौत प्राप्त करते देख समस्त देवताओं में हर्ष की लहर दौड़ उठी। उन्होंने महाशक्ति के आगे नतमस्तक होकर बार-२ यही विनय किया।-

आपने महान बलशाली राक्षस को मार हमें अभय किया, हमारे अधिकार हमें प्राप्त कराये। हमारी सब इच्छायें पूर्ण हो गई। अब हम आपसे यही विनय करेंगे कि जब भी हम आपका स्मरण करें आप हमें दर्शन देकर कृतार्थ करें और हमारे संकटों का निवारण करें।

हम आपके भक्त हैं। हमारी मुसीबत के समय में आप हमारे शत्रुओं का नाश करके हमारी मनोकामना को पूर्ण करें।

महाशक्ति ने अंतर्ध्यान होने से पूर्व समस्त देवताओं को आश्वासन दिया कि दुःख व संकट के समय केवल स्मरण मात्र से ही मैं तुम्हारे सम्पूर्ण कष्टों का निवारण करने के लिए स्वयं प्रकट हो जाऊंगी।

महिषासुर के वध के सहस्रों वर्षों के बाद देवताओं पर संकट के बादल छा गये। शुम्भ और निशुम्भ दो और असुर हुए जिन्होंने इन्द्र, सूर्य, अग्नि आदि देवताओं को जीतकर अपना राज्य स्थापित कर दिया।

अपने ऊपर आये इस संकट के निवारण के लिए उन्होंने महाशक्ति को याद किया और विचारा कि माता ने हमको वरदान दिया था कि जब भी मेरे भक्तों पर कोई भी आपत्ति आयेगी मैं उनकी रक्षा करूंगी।

मातेश्वरी के इस आश्वासन का ध्यान कर समस्त देवता हिमालय पर जाकर उनकी स्तुति करने लगे।

देवताओं की परम् भक्ति भावना को देखकर देवी भगवती अम्बिका के नाम से अवतरित हुई। माता अम्बिका के प्रकट होते ही समस्त देवताओं ने देवी से कहा—'हे कष्टों के निवारण करने वाली माता! आज हम पर पुनः घोर संकट उमड़ आया है। शुम्भ और निशुम्भ ने हमें पराजित कर हमारा राज्य छीनकर हमारा अपमान किया है।

देवताओं की इस करुणा गाथा को सुनकर भगवती हिमालय पर तपस्या करने चल पड़ी।

एक दिन शुम्भ और निशुम्भ के दो शक्तिशाली दूत चण्ड और मुण्ड घूमते हुए हिमालय पर आ निकले वहां

उन्होंने अति सुन्दर रूप में माँ दुर्गा को तपस्या में लीन देखा। उन्होंने ऐसी मनोहर रूप की नारी को पहले कभी नहीं देखा था। रूप ऐसा सुन्दर था कि सारा हिमालय उस रूप में अलौकिक हो रहा था।

चण्ड और मुण्ड तुरन्त अपने स्वामी शुम्भ और निशुम्भ के पास पहुँच कर बोले–'हे असुर महाराजधिराज हिमालय पर एक अत्यन्त रूपवती स्त्री बैठी तपस्या में लीन है। उसका मुख दुःख दूर करने वाले चन्द्रमा के समान है। पलकें सर्प की शोभा को चुराती हैं। नेत्र कमल से बढ़कर हैं। धनुष जैसी भवें बाण जैसी पलकें हैं, सिंह जैसा कटि भाग है, हस्ति जैसी गति, रति की शोभा को भी हरने वाली है। हाथ में खड्ग है जो सूर्य के समान प्रकाशवान है।

सुन्दरी की ऐसी प्रशंसा सुनकर शुम्भ ने दूतों से उस परम् रूपवती स्त्री के पास विवाह का प्रस्ताव भेजा। दूतों ने देवी के पास जाकर कहा–हे सुन्दरी! हमें तीनों लोकों के स्वामी शुम्भ और निशुम्भ ने भेजा है वे आप को अपनी पत्नी के रूप में स्वीकार करना चाहते हैं। उन्होंने तुम्हारे रूप की प्रशंसा सुनकर हमें आपके पास आपको लाने के लिए भेजा है। अतः आप जल्दी से जल्दी चलने की तैयारी करें।

दूतों की इस प्रकार की बातें सुनकर देवी क्रोधित हो उठी और बोली—अरे मतिहीन दूतों ! जाकर अपने महाराज शुम्भ-निशुम्भ से कह दो कि जो पराक्रमी योद्धा युद्ध में मुझसे जीतेगा मैं उसी को वर मानूंगी ।

धूम्रनयन वध

शुम्भ और निशुम्भ की सभा में दूत ने जाकर जब देवी की यह बात कही तो सभा के मध्य से धूम्रनयन नामक राक्षस ने उठकर बड़े गर्व के साथ कहने लगा—हे महाराज उस रूपवती स्त्री का इतना साहस, आप मुझे आज्ञा दीजिये मैं उसको बातों से ही रिझा लाऊंगा अगर उसने फिर भी आनाकानी की तो मैं अपने बल से उसके केश पकड़ कर घसीटता हुआ ले आऊंगा ।

धूम्रनयन की यह बात सुनकर शुम्भ ने उसे देवी को लाने के लिए एक बड़ी सेना देकर भेज दिया । इसी सेना में शुम्भ के दो बड़े विश्वस्त योद्धा दैत्य चण्ड और मुण्ड थे ।

उधर चण्ड-मुण्ड के साथ एक बड़ी राक्षसी सेना को आता देखकर देवी को बड़ा जबरदस्त क्रोध आ गया और इस क्रोध के कारण जगदम्बा का मुख काला पड़ गया और तुरन्त ही वहां विकराल रूप में काली देवी प्रकट हुई । बड़े बड़े राक्षस योद्धाओं को मारती हुई महाकाली धूम्रनयन के पास पहुँच गई तथा कृपाण के एक ही वार में धूम्रनयन

का सिर धड़ से अलग कर दिया और महाबली दैत्य धूम्रनयन सदा के लिए रणभूमि में सो गया।

चण्ड-मुण्ड वध

सेनापति धूम्रनयन को मौत की गोद में जाते हुए देख मुण्ड क्रोधित हो उठा। वह आगे बढ़-बढ़कर काली पर हमला करने लगा। मुण्ड के साथ महाकाली का भयंकर युद्ध हुआ जिसको देखकर ही अन्य राक्षसों के पसीने छूट गए तथा कुछ ही समय में काली ने मुण्ड का सिर इस प्रकार अलग कर दिया जैसे बेल से कद्दू गिर जाता है। मुण्ड की इस राक्षसी लीला का अन्त करके काली चण्ड की ओर बरछा लेकर गई। चण्ड ने बचने की अनेकों कोशिश की परन्तु सब बेकार गई तथा अन्त में मां काली ने फरसे के एक ही वार से चण्ड का सिर धड़ से अलग कर दिया।

रक्तबीज वध

अपने महान दैत्यों को मारे जाने पर शुम्भ-निशुम्भ ने एक विशिष्ट राक्षस को लड़ने के लिए भेजा। रक्त की बूंदें जमीन पर गिरते ही वहां नये रक्तबीज पैदा हो जाते थे। रक्तबीज को वास्तव में इसका अभिमान होना भी ठीक ही था। वह किसी भी रणभूमि में सहर्ष जाया

करता था और आज भी उसी दर्प से देवी से लड़ने निकल पड़ा। देवी को समक्ष देख उसने घोर अट्टहास किया और तीरों की ऐसी वर्षा की कि देखने वालों को भ्रम होने लगा कि वास्तव में वर्षा है या तीरों की बौछार। एक दूसरे पर प्रहार का यह क्रम लगातार बहुत समय तक चलता रहा।

अब तक दुर्गा ने रक्तबीज पर जितने भी प्रहार किये उनसे रक्तबीज के शरीर से जगह-जगह खून बह रहा था तथा उस खून की जितनी बूंदें जमीन पर गिरतीं उतने ही रक्तबीज और पैदा होते जाते थे इस प्रकार उत्पन्न अनेक रक्तबीजों ने दुर्गा और उसके सिंह को घेर लिया लेकिन चण्डी और सिंह ने मिलकर युद्ध में उन सब दैत्यों का समूह मार गिराया।

इस प्रकार जब रक्तबीज के रक्त से बार-बार अनेकों रक्तबीज उत्पन्न होते रहे तो चण्डी ने काली से कहा कि मैं इस महाबलशाली दैत्य पर प्रहार करूं तो तुम इसके खून को जमीन पर न गिरने देना। तब काली ने रौद्र रूप में हाथ में खप्पर लेकर रक्तबीज से गिरने वाली खून की बूंदों को खप्पर में भर-भर कर पिया। माता ने रक्तबीज को जब अन्तिम बार त्रिशूल से मारा तो काली मां ने उसका सारा खून पी लिया। इस प्रकार उसका सर्वनाश किया।

निशुम्भ वध

जो मामूली राक्षस बच रहे थे उन्होंने जाकर अपने स्वामी शुम्भ-निशुम्भ से शोणित बिन्दु के मारे जाने की सूचना दी। यह सुनकर निशुम्भ हाथ में खड्ग संभालते हुए बोला—क्या रक्तबीज भी चण्डी से ऐसे ही मारा गया जैसे जंगल का सिंह छोटे से जानवर को मार डालता है।

क्रोध में भरकर शुम्भ और निशुम्भ ने युद्ध की ऐसी दुंदुभी बजाई कि दशों दिशायें गूंज उठीं। रणनीति के अनुसार अपनी सेनाओं को अनेक प्रकार से सजाकर ध्वजा फहराता हुआ निशुम्भ ऐसे चला मानों कोई पहाड़ ही उड़कर चल दिया हो। हर ओर धूल ही धूल उड़ने लगी। उधर चण्डी के कानों में भी एक नये दैत्य के आगमन की भनक पड़ी। चण्डी ने भी पहाड़ से उतर कर शत्रु को ललकारते हुए महान् कोलाहल किया। देवी को देखते ही निशुम्भ ने एक बहुत बड़ा धनुष तान लिया उसकी टंकार ही ऐसी बजी कि मानो बादल गरज रहे हों। ऐसे भयंकर दैत्य को देखकर देवी ने अपनी सभी शक्तियों को अपने में समा लिया। देवी और निशुम्भ का घोर संग्राम हुआ।

शत्रुओं के सिर ऐसे गिर रहे थे जैसे शहतूत के वृक्ष

को हिलाने से शहतूत गिरते हैं। पूर्ण क्रोध में भरकर जब चण्डी ने निशुम्भ पर तीर मारा तो उसका सिर भी दो टुकड़े होकर गिर गया और रणभूमि में अन्धेरा सा छा गया।

शुम्भ वध

निशुम्भ का सिर जब मैदान में इस तरह गिर गया तो दैत्य अपने धनुष-बाण छोड़कर दौड़ते हुए शुम्भ के पास गए और उसके भाई के मारे जाने की उसको सूचना दी। अपने भाई के मारे जाने पर शुम्भ के क्रोध का ठिकाना न रहा। वह बिना एक पल भी व्यतीत किये युद्ध भूमि में पहुँचा और देवी से बोला—तूने अन्य शक्तियों की सहायता लेकर मेरी इतनी बड़ी सेना और मेरे भाई को मारा है, अब देख मैं अकेला ही तुझसे बदला लूंगा।

मातेश्वरी ने कहा—मेरे साथ अन्य कोई दूसरी शक्ति नहीं है। समय आने पर मेरी शक्ति अलग-अलग रूप धारण कर मेरे ही शरीर से निकलती हैं और फिर मुझमें ही प्रवेश कर जाती हैं। यह देख अब मैं तुझसे लड़ने के लिए अकेली ही खड़ी हूँ, अब तैयार हो जा।

युद्ध में शुम्भ के भी प्राण निकल गए और सब देवताओं ने मिलकर माता का जयकारा बोला।

—:०:—

श्री वैष्णव देवी दरबार यात्रा

(इतिहास और पथ प्रदर्शिका)

वैष्णव माता कटरा से लगभग १४.५ किलोमीटर ऊपर समुद्र की सतह से २५०० फुट की ऊंचाई पर त्रिकूट पर्वत की घाटी की सुन्दर गुफा में महाकाली, महालक्ष्मी, महासरस्वती की पिण्डी रूप में निवास कर भक्तों की मनोकामना पूर्ण कर रही हैं।

यात्रा का समय--

सामान्य रूप से श्रद्धालु यात्रीगण पूरे वर्ष भर माता वैष्णों के दर्शन के लिए आते हैं परन्तु आश्विन व चैत्र मास की नवदुर्गाओं या नवरात्रों में यात्रा करने का विशेष माहात्म्य माना गया है। जनवरी एवं फरवरी में हिमपात होने से मार्ग कठिन हो जाता है। अतः इन दो महीनों में छोटे बच्चों व बूढ़ों को साथ लेकर यात्रा करना उचित नहीं रहता। नवयुवकों के लिए तो सभी मौसम

उपयुक्त हैं। चैत्र व आश्विन के नवरात्रों (मार्च-सितम्बर) में सपरिवार यात्रा बड़ी सुविधा से की जा सकती है। इन दिनों मौसम भी सुहावना हो जाता है।

यातायात—

(१) जम्मू तक यात्री देश के विभिन्न भागों से बस या रेल द्वारा पहुँचते हैं। जम्मू से कटरा के लिए लगभग हर आधे घण्टे या एक घण्टे बाद बसें चलती रहती हैं। किराया ४ रु० ३५ पैसे प्रति व्यक्ति है। डीलक्स बस का किराया ५ रु० ५० पैसे प्रति व्यक्ति है।

(२) जम्मू से कटरा के लिए टैक्सी भी उपलब्ध है। चार व्यक्तियों का टैक्सी भाड़ा ६० रु० है।

(३) कटरा से पहाड़ी मार्ग पैदल शुरू होता है। डांडी, घोड़ा, खच्चर व कुली (पिट्ठू) निर्धारित किराए पर मिल सकते हैं।

कटरा—

समुद्र तल से लगभग २५०० फुट की ऊंचाई पर त्रिकूट पर्वत के चरणों में बसी बस्ती वैष्णव देवी की यात्रा का आधार रूप है। कटरा से दरबार तक १४.५ किलो मीटर की दूरी रह जाती है, जो प्रत्येक यात्री को पैदल अथवा घोड़े आदि पर तय करनी होती है। मार्ग में

स्थान-स्थान पर प्याऊ (छबीली) आदि लगी हुई हैं। सरकार की ओर से नल का भी प्रबन्ध है। पूरे रास्ते में बिजली के प्रकाश का प्रबन्ध है फिर भी रात को यात्रा करते समय टार्च आदि रखना आवश्यक है।

कटरा में एक ही लम्बा बाजार है, जहां दैनिक उपयोग व यात्रा सम्बन्धी लगभग सभी वस्तुएं उपलब्ध हैं। खाने पीने के लिए कई होटल व ढाबे आदि हैं, उचित मूल्य पर अच्छा खाना मिलता है।

ठहरने के लिए भी कटरा में कोई कठिनाई नहीं है। अनेकों धर्मशालायें, होटल व प्राइवेट हाऊस हैं। इसके अतिरिक्त टूरिस्ट विश्राम गृह भी बने हुए हैं। मुख्य धर्मशालायें धर्मार्थ सराय, चिन्तामणि टूरिस्ट, दिल्ली वाली सराय, श्रीधर सभा सराय। टूरिस्ट रिसेप्शन सेन्टर में अतिरिक्त सामान आदि भी २५ पैसे प्रति नग के हिसाब से जमा किया जा सकता है। कटरा में रघुनाथ मन्दिर व चिन्तामणि मन्दिर दर्शनीय है।

आवश्यक सूचनाएं—

वैष्णव देवी दरबार जाने वाले प्रत्येक यात्री के लिए कटरा से 'यात्री-पर्ची' प्राप्त करना अनिवार्य है। यात्रा पर्ची बस स्टेन्ड पर ही स्थित, टूरिस्ट रिसेप्शन सेन्टर

कटरा में सुविधा से मिलती है। इसके लिए कोई शुल्क



नहीं देना होता। [illegible] पर्ची के लिए यात्रियों को बाण
गंगा से वापिस आना पड़ता है। भवन पर पहुँच कर [illegible]

पर्ची दिखाकर पवित्र गुफा में दर्शनों के लिए नम्बर मिलता है।

माता के मन्दिर की यात्रा करते समय कपड़े या रबड़ के जूते पहन कर ही यात्रा करने का नियम है। धार्मिक भावना से भी कपड़े अथवा रबड़ के जूते ही उचित हैं कटरा में कई दुकानों से उचित किराये पर कपड़े के जूते सुविधा से मिल जाते हैं नये भी खरीद सकते हैं।

यात्रा सादगी एवं पवित्रता के साथ करें। यात्रा में मांस-मदिरा व किसी प्रकार का नशा वर्जित है।

वर्षा ऋतु में छाता या बरसाती आदि लाना चाहिए। बाँस की छड़ी, सूखे मेवे, बिस्कुट, भेंट की सामग्री (नारियल, चोले, चुन्नी, ध्वजा, छत्र, पान सुपारी आदि) थरमस, कुर्सी, टार्च, कैमरा, दूरबीन यदि इच्छा हो साथ ले जाना चाहिए। यह सब वस्तुएं कटरा में सुविधा से उचित मूल्य पर मिल जाती हैं। छड़ी कैमरा व टार्च आदि कटरा की दुकानों से किराये पर भी मिलते हैं।

भेंट की सामग्री वैष्णों देवी दरबार पर स्थित दुकानों पर भी उपलब्ध होती है।

रेजगारी कटरा से दरबार तक स्थान-स्थान पर छोटी कन्याओं को बांटने व मंदिरों आदि पर चढ़ाने के लिए साथ रखें। कटरा की दुकानों से रेज गारी मिल जाती है

गुफा से निकलने वाले पवित्र जल को प्रसाद रूप में साथ लाने के लिए कोई शीशी या बर्तन साथ ले जावें।

एक ही दिन में पूरी यात्रा न कर सकने वाले यात्री आदिकुमारी नामक स्थान पर विश्राम कर सकते हैं। यह स्थान लगभग आधे रास्ते में है। आदिकुमारी तथा वैष्णों देवी दरबार दोनों ही स्थानों पर कम्बल, दरी, स्टोप तथा खाना बनाने के बर्तन आदि मूल्य जमा कराने पर निःशुल्क उपयोग के लिए मिल जाते हैं। वस्तुओं को लौटा देने पर जमा की हुई राशि वापस मिल जाती है। यह प्रबन्ध धर्मार्थ संस्थाओं की ओर से किया गया है।

वैष्णव माता के अवतार धारण की कथा—

देश में विपरीत परिस्थितियां होने पर, समय-समय पर महाशक्ति ने अपने भिन्न-भिन्न रूप धारण कर, दुष्टों का नाश व भक्तों की रक्षा की है। देवताओं के एकत्रित तेज समूह से उत्पन्न महाशक्ति ने ही कालान्तर में महाकाली, महालक्ष्मी एवं महासरस्वती रूप धारण किए—यह तीनों रूप रज, तम एवं सात्विक गुणों के प्रतीक हैं।

त्रेतायुग में जब इस पृथ्वी पर रावण, कुम्भकर्ण ताड़का, खरदूषण आदि दैत्यों ने अत्याचार आरम्भ किये, तब महाकाली, महालक्ष्मी एवं महासरस्वती तीनों महाशक्तियों ने धर्म की रक्षा के लिए अपने तेज समूह से एक दिव्य शक्ति को जन्म देने का निश्चय किया, तीनों शक्तियों के स्वरूपों से तेज एकत्रित हुए और संयुक्त होकर एक सुन्दर दिव्य कन्या के रूप में प्रकट हो गए। उस कन्या ने महाशक्तियों से पूछा—आपने मुझे क्यों उत्पन्न किया है उत्तर मिला कि इस संसार में हमने तुम्हें धर्म की रक्षा एवं प्रचार के लिए प्रकट किया है। अब तुम दक्षिण भारत में रत्नाकर सागर के घर पुत्री बनकर जन्म लो। वहां तुम

भगवान विष्णु के अंश से अवतार धारण करो। उसके पश्चात् तुम आत्म-प्रेरणा से धर्म की रक्षा एवं प्रचार करोगी।

महाशक्तियों की आज्ञानुसार दिव्य कन्या ने रत्नाकर सागर के घर में अवतार धारण किया। कन्या का नाम त्रिकूटा रखा गया। बाद में यही कन्या भगवान् विष्णु के अंश से उत्पन्न होने के कारण 'वैष्णवी' नाम से भी विख्यात हुई तथा जिस धर्म का प्रचार कन्या ने किया वह वैष्णव धर्म कहलाया। वैष्णव शब्द का अपभ्रंश ही वैष्णों है।

अल्प आयु में ही देवी त्रिकूटा ने अपनी अलौकिक शक्ति से ऋषियों मुनियों और देवताओं को भी अपनी ओर आकर्षित कर लिया। दिव्य कन्या के दर्शनों के लिए दूर-दूर से लोग आने लगे। कुछ समय बाद त्रिकूटा ने अपने पिता से आज्ञा लेकर समुद्र तट पर, भगवान राम के ध्यान में लीन होकर तप किया तथा उनकी प्रतीक्षा करने लगी। जब रावण ने सीता जी का हरण किया तब श्री रामचन्द्र जी वानर सेना के साथ समुद्रतट पर पहुँचे तो उन्होंने वहां समाधि में बैठी उस दिव्य कन्या को देखा। श्री राम उसकी भक्ति देखकर प्रसन्न हुए। भगवान् राम

के पूछने पर त्रिकूटा ने अपने पिता का परिचय दिया और अपनी घोर तपस्या का कारण भी बताया कि मैंने आपको पति के रूप में प्राप्त करने का संकल्प किया है। यह सुनकर प्रभु बोले—हे सुन्दरी ! मैंने इस अवतार में एक पत्नीव्रती होने का संकल्प किया है। किन्तु त्रिकूटा ने अपने विचार न बदले। अन्त में भगवान् राम ने कहा कि मैं एक बार तुम्हारी कुटिया पर भेष बदल कर आऊंगा, यदि फिर भी तुमने मुझे पहचान लिया तो मैं तुम्हें पत्नी रूप में ग्रहण कर लूंगा। लंका से अयोध्या लौटते समय भगवान वृद्ध साधु का रूप धरकर वहां गए। कन्या उसे पहचान न सकी। भगवान राम ने उसे आश्वासन दिया कि कलियुग में जब मेरा कल्की अवतार होगा तब मैं तुम्हें अपनी शक्ति के रूप में ग्रहण करूंगा। उस समय तक के लिए तुम उत्तर भारत में मणिक पर्वत के तीन शिखरों वाले त्रिकूट पर्वत पर गुफा में जो द्वापर में पाण्डव व श्री कृष्ण द्वारा तीन पिण्डियां स्थापित करेंगे उनमें तीन महाशक्तियों का निवास होगा जो महाभारत काल में उनकी रक्षा करेंगी। उन महाशक्तियों के नाम हैं,

महाकाली, महालक्ष्मी, महासरस्वती तुम उस त्रिकूट पर्वत पर जहां शीतल जल सदैव प्रवाहित रहता है। वहां पहुंच कर तपस्या में लीन हो जाओ। वहां पर तुम अमर हो जाओगी। नल, नील, हनुमान, जामवन्त आदि लंगूर वीर तुम्हारे प्रहरी होंगे। समस्त भारत में तुम्हारी महिमा फैलेगी और वैष्णव देवी नाम से तुम्हारी प्रसिद्धि होगी।

विश्वास किया जाता है कि तभी से रत्नाकर सागर की कुंवारी कन्या वैष्णवी, जो देवताओं के पुण्य आशीर्वाद से प्राप्त हुई रामावतार वैष्णवमय त्रेतायुग से ही इस सुन्दर गुफा में विराजमान है और तपस्या में लीन है। जिसके विषय में प्राचीन कथाओं से आधार लिया जा सकता है युग बदलते गए, माता अपनी लीलाएं समय-समय पर दिखलाती आई और कितनी ही अन्य कथाओं का जन्म हुआ। माता ने अपनी लीला इन स्थानों पर विशेष रूप से की जिस कारण इसे महत्वपूर्ण माना गया। कलियुग में इसी कथा का प्रचार अधिक हुआ है। प्रमुख लीला-स्थल और इतिहास इस प्रकार है—

—※—

भूमिका मन्दिर व भक्त श्रीधर को दर्शन—

यहीं से माता वैष्णव देवी की विशेष भूमिका बंधती है। कटरा से लगभग दो किलोमीटर की दूरी पर हंसली नामक ग्राम में यह मन्दिर है। यहां से थोड़ी सी नई बस्ती है। कहा जाता है कि लगभग ७०० वर्ष पूर्व माता के परम भक्त श्रीधर जी हुए थे जो इसी ग्राम के निवासी थे वे नित्य नियम से कन्या पूजन करते थे। संतान न होने के कारण वह दुःखी रहा करते थे। श्रीधर जी की सच्ची उपासना और दृढ़ विश्वास देखकर मां वैष्णों को स्वयं एक दिन कन्या रूप धारण करके आना पड़ा। भक्त जी कन्या पूजन की तयारी कर रहे थे, छोटी २ कन्याएं उपस्थित थीं। उन्हीं में जगमाता भी कन्या बनकर आ गई। नियम के अनुसार पांव धोकर भोजन परोसते समय श्रीधर जी की दृष्टि उस महा दिव्य रूप कन्या पर पड़ी। वे विस्मय में डूब गये क्योंकि यह कन्या उन्होंने कभी देखी न थी और न ही उनके गांव की प्रतीत होती थी। अन्य

कन्यायें तो दक्षिणा लेकर चली गई पर वह दिव्य कन्या वहीं बैठी रही। श्रीधर जी उससे कुछ प्रश्न करना ही चाहते थे कि वह कन्या रूपी महाशक्ति स्वयं ही बोली—"मैं तुम्हारे पास एक काम से आई हूँ।" छोटी सी कन्या के मुंह से विचित्र बात सुनकर भक्त जी बहुत हैरान हुए। कन्या ने कहा कि आप अपनेगांव में और आस-पास यह संदेश दे आओ कि कल दोपहर आपके यहां महान भण्डारे का आयोजन है, इतना कहकर वह कन्या वहां से लुप्त हो गई।

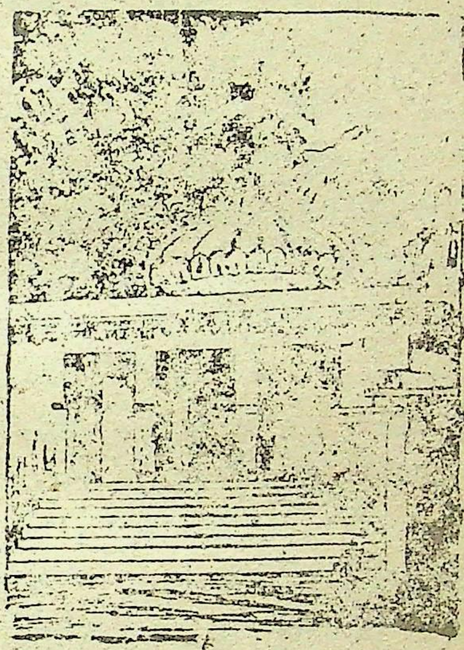
श्रीधर जी विचारों में डूब गए।

आखिर यह कन्या कौन थी?

हो न हो यह जरूर कोई शक्ति थी, परन्तु भण्डारे वाली समस्या से श्रीधर जी परेशान हो गये। अन्त में उन्होंने कन्या की कही हुई बात को ही मुख्य रखा और आस पास के गांवों में भण्डारे का निमन्त्रण देने निकल पड़े।

श्रीधरजी भण्डारे का संदेशा देने एक गांव से दूसरे गांव जा रहे थे तो मार्ग में एक साधुओं के दल को देखकर श्रीधर जी ने उन्हें प्रणाम किया और साथ ही उन्हें होने

वाले भण्डारे में पधारने का निमन्त्रण भी दिया। तब गोरखनाथ ने भक्त जी से उनका नाम पूछा और मुस्करा



भूमिका मन्दिर

कर बोले—ब्राह्मण! तू मुझे, भैरवनाथ और अन्य ३६० चेलों को निमन्त्रण देने में भूल कर रहा है। हमें तो देवराज इन्द्र भी भोजन न दे सके।

इस पर श्रीधर जी ने उन्हें कन्या के आगमन की कथा सुनाई। गोरखनाथ जी ने विचार किया कि ऐसी

कौन सी कन्या है जो सबको भोजन खिला सकती है ? परीक्षा करके तो देखनी चाहिये अतः उन्होंने श्रीधर जी से कह दिया—हमें निमन्त्रण स्वीकार है, कल समय पर आ जायेंगे।

उस दिन तो श्रीधर जी गांव-गांव घूमते थके हारे रात को आकर सो गये। प्रातःकाल होते ही फिर पंडितजी इस विचार में खो गये कि मुझमें तो इतने बड़े भण्डारे की सामर्थ्य नहीं, प्रबन्ध कैसे हो ? न मालूम समय कब बीत गया और भीड़ एकत्रित होने लगी। उधर गोरखनाथ और भैरवनाथ जी अपने २ चेलों सहित आ गये।

श्रीधर जी चिन्ता में बैठे थे कि अचानक ही दिव्य रूपा कन्या प्रकट हो गई और भक्त जी के सम्मुख आकर बोली—अब सब प्रबन्ध हो जावेगा, उठिये और महात्माओं से कहिये कि कुटिया में चलकर भोजन करें। श्रीधर जी उत्साह से गुरुजी के पास जाकर बोले—चलिए कुटिया में बैठकर भोजन कीजिए। इस पर गुरुजी बोले—हम चेलों सहित कुटिया में नहीं आ सकते क्योंकि उसमें स्थान बहुत छोटा है। इस पर श्रीधर जी बोले—गुरुजी उस कन्या ने ऐसा ही कहा है।

जिस समय जोगी कुटिया में गये तो सबके सब आराम से बैठ गये, फिर भी जगह बची रही। बाहर भी

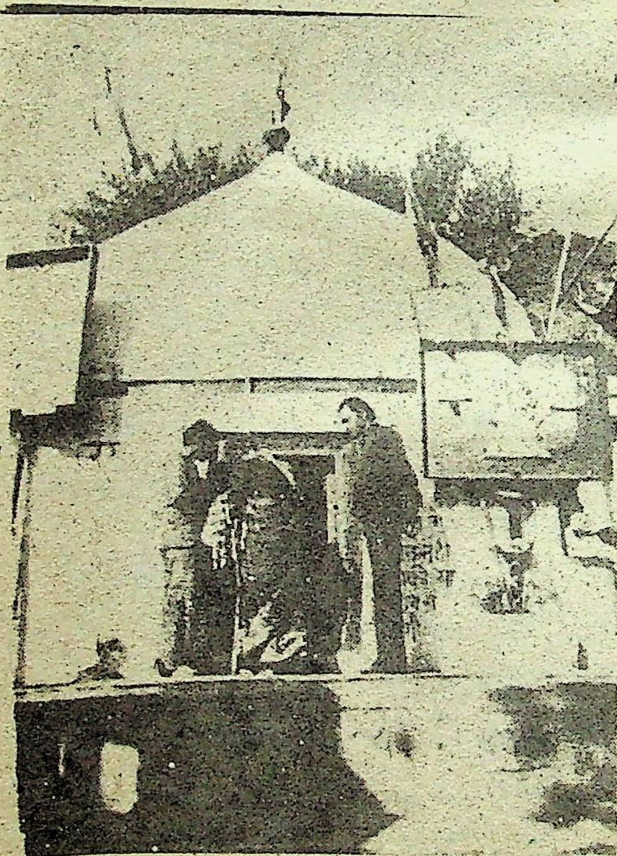
सब लोग बैठे थे। कन्या ने जब आने एक विचित्र पात्र से सबको भोजन देना आरम्भ किया तो श्रीधर जी प्रसन्न हुए और सब हैरान।

यह देख गोरखनाथ और भैरवनाथ ने परस्पर विचार विमर्श किया कि यह कन्या अवश्य ही कोई शक्ति है। यह वास्तव में कौन है, इसका पता लगाना चाहिये जिस समय कन्या सबको भोजन परोसती हुई भैरवनाथ के पास पहुँची तो भैरव ने कहा—'कन्या! तूने सबको उनकी इच्छा का भोजन दिया है लेकिन मेरा मन कुछ और चाहता है। बोलो जोगीनाथ तुम्हें क्या चाहिये? कन्या का उत्तर था। भैरव ने देवी से मांस और मदिरा मांगी तो कन्या ने भैरव को आदेश के स्वर में कहा—यह एक ब्राह्मण के घर का भण्डारा है। जो कुछ वैष्णव भण्डारे में होता है, वही मिलेगा।

भैरव हट करने लगा क्योंकि उसे तो कन्या की परीक्षा लेनी थी, लेकिन भैरवनाथ के मन की बात तो वैष्णव देवी पहले ही जान चुकी थी। ज्योंही भैरव ने क्रोध करके कन्या को पकड़ना चाहा वह कन्या रूपी महाशक्ति अन्तर्ध्यान हो गई। यह देखकर भैरव ने भी उसी समय उसकी खोज में पीछा करना आरम्भ कर दिया।

दर्शनी दरवाजा—

कटरा से लगभग एक किलोमीटर चलने के बाद दर्शनी दरवाजा नामक प्रसिद्ध स्थान है। यहां पर एक

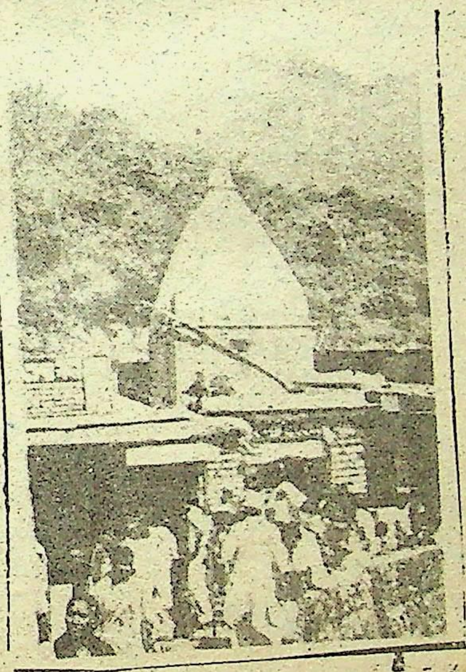


दर्शनी दरवाजा

ऊंचा पत्थर का दरवाजा बना हुआ है, जहां से त्रिकूट पर्वत का सुन्दर दृश्य दिखाई देता है। इसी मार्ग से होकर देवी कन्या त्रिकूट पर्वत की ओर गई थी, स्मृति स्वरूप यह स्थान बना है। भूमिका मन्दिर से भी एक मार्ग दर्शनी दरवाजा तक जाता है।

बाण गंगा—

कन्या रूपी महाशक्ति जब वहां से अन्तर्ध्यान होकर



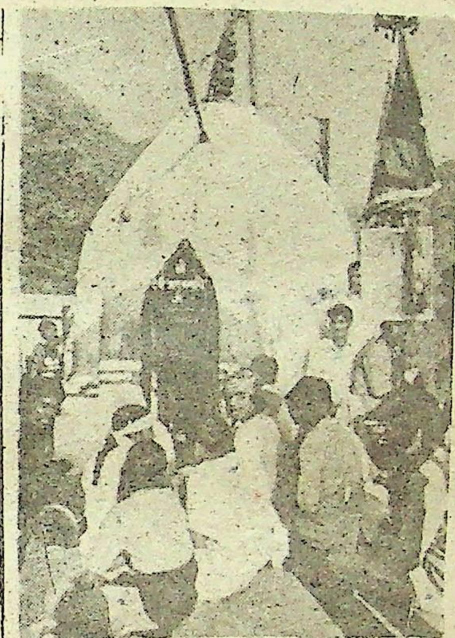
बाण गंगा मन्दिर

आगे बढ़ी तो उसके साथ में वीर लांगुर भी था। चलते-चलते वीर लांगुर को प्यास लगी तब देवी ने पत्थरों में बाण मार कर गंगा प्रवाहित कर दी और अपने वीर की प्यास को तृप्त किया। उसी गंगा में ही देवी ने अपने केश भी धोकर संवारे थे इसलिए इसे बाल गंगा भी कहते हैं। यह स्थान कटरा से २ ..० मी० और पिछले दर्शनी दरवाजा नामक स्थान से १ किलोमीटर है। एक पुल द्वारा इस गंगा को पार करके आगे बढ़ते हैं। समीप ही मन्दिर है। अधिकांश लोग यहां स्नान भी करते हैं। यहीं से सीढ़ियों वाला पक्का मार्ग प्रारम्भ हो जाता है। साथ ही कच्चा मार्ग भी है जिसमें खच्चर घोड़े आते-जाते हैं।

चरण पादुका—

इस स्थान पर रुककर देवी ने पीछे की ओर देखा था कि भैरवनाथ आ रहा है, या नहीं। रुकने के कारण इस जगह पर माता के चरण चिन्ह बने जिस कारण इस जगह को चरण पादुका का नाम दिया गया

है। बाण गंगा से यह स्थान डेढ़ किलामीटर है। वैष्णों



चरण पादुका मन्दिर

देवी यात्रा का यह दूसरा विश्राम स्थान है। एक दो चाय की दुकानें भी हैं।

आदिकुमारी और गर्भजून गुफा–

चरण पादुका से काफी दूर पहुँच कर वैष्णवी कन्या ने बैठे एक तपस्वी को अपनी झलकें दिखाई और कहा–

हे तपस्वी ! मैं यहां कुछ देर आराम करूंगी। कोई मेरे बारे में पूछने आये तो कुछ मत बताना। यह कह कर कन्या पास की गुफा में चली गई और फिर वह



आदिकुमारी मन्दिर

कन्या गुफा में दो महीने तक तपस्या में लीन रही। उधर भैरवनाथ भी कन्या की खोज करता हुआ यहां तक आ पहुंचा। उसने तपस्वी से पूछा—क्या तुमने किसी कन्या को इधर जाते देखा है ?

यह सुनकर तपस्वी ने भैरवनाथ से कहा—जिसे तू साधारण कन्या समझता है वह तो महाशक्ति है और आदिकुमारी है अर्थात् जब से सृष्टि की रचना हुई है तभी से उसने कौमार्य व्रत धारण किया है जा यहां से चला जा। भैरव हठ करके गुफा के अन्दर घुसा तो गुफा में बैठी हुई देवी ने अपने त्रिशूल के प्रहार से गुफा के पीछे से दूसरा मार्ग बनाया और बाहर निकल गई। देवी कन्या आगे चली गई और भैरोनाथ पीछा करता रहा।

यह स्थान चरण पादुका से ४-५ किलोमीटर है यहां भगवती वैष्णों देवी का आदिकुमारी नाम से मन्दिर है। ठहरने के लिए काफी बड़ी धर्मशाला है। समीप ही पक्का तालाब भी है जो यात्री यहां पर विश्राम करना चाहें वह शेष यात्रा दूसरे दिन कर सकते हैं खाने-पीने की कई दुकानें हैं। गर्भजून दर्शनीय है।

हाथी मत्था—

आदिकुमारी से पहाड़ की चढ़ाई को हाथी मत्था कहा जाता है यहां सीढ़ियों वाले मार्ग की अपेक्षा

घुमावदार कच्चे मार्ग से जाना अच्छा रहता है। यह स्थान आदिकुमारी से २.५ कि० मी० है। चाय, फल आदि की दुकानें हैं।

सांझीछत—

हाथी मत्था से २ कि० मी० का सीधा मार्ग है यहां से भैरव मन्दिर के लिए छोटा रास्ता जाता है यहां चाय की दुकान और प्याऊ है।

सामान्यतः यात्री हाथी मत्था से सांझी छत की ओर न जाकर नये रास्ते से दिल्ली वाली छबीली होकर दरबार की ओर जाते हैं। क्योंकि भैरव मन्दिर के दर्शन का विधान भी लौटती बार ही है। इस प्रकार यात्रियों को लगभग २ कि० मी० कम चलना पड़ता है।

भैरव मन्दिर—

देवी कन्या आगे बढ़ती रही, भैरवनाथ पीछा करता रहा। देवी ने भैरव को आदेश भी दिया कि वापिस चले जाओ किन्तु भैरव न माना। यदि महामाया चाहती

तो सब कुछ कर सकती थी। लेकिन भैरों की जिज्ञासा भी सच्ची थी। अन्त में त्रिकूट पर्वत की सुन्दर गुफा तक पहुँची। गुफा के द्वार पर देवी ने अपने लांगुर वीर को प्रहरी बना कर खड़ा किया और भैरोंनाथ को अन्दर आने से रोकने लिए कहा। कन्या जब गुफा में घुस गई तो भैरों भी पीछे जाने लगा। लांगुर वीर ने उसे जाने से रोका तो दोनों का युद्ध हुआ। लांगुर वीर जब परास्त होने लगा तो शक्ति ने स्वयं चण्डी रूप धारण कर उसका वध कर दिया। धड़ वहीं गुफा पर और सिर घाटी में गिरा जिस घाटी में सिर गिरा उसे अब भैरों घाटी कहा जाता है।

सिर धड़ से अलग होने पर भैरव की आवाज आई हे आदि शक्ति! हे जगदम्बा मुझे मरने का कोई दुःख नहीं क्योंकि मैं स्वयं शक्ति के हाथ से मरा हूँ। हे मातेश्वरी मुझे क्षमा कर देना। अगर तूने मुझे क्षमा नहीं किया तो आने वाला युग मुझे पापी की दृष्टि से देखेगा। लोग मेरे नाम से घृणा करेंगे। भैरों के मुख से बारम्बार 'मां' शब्द सुनकर माता ने उसे वरदान दिया कि मेरे बाद तेरी भी

पूजा होगी। मेरे भक्त मेरे दर्शनों के बाद तेरा भी दर्शन किया करेंगे तभी उनकी यात्रा सफल होगी। तेरे स्थान का दर्शन ना करने पर मनोकामना पूरी नहीं होगी।



भैरव मन्दिर

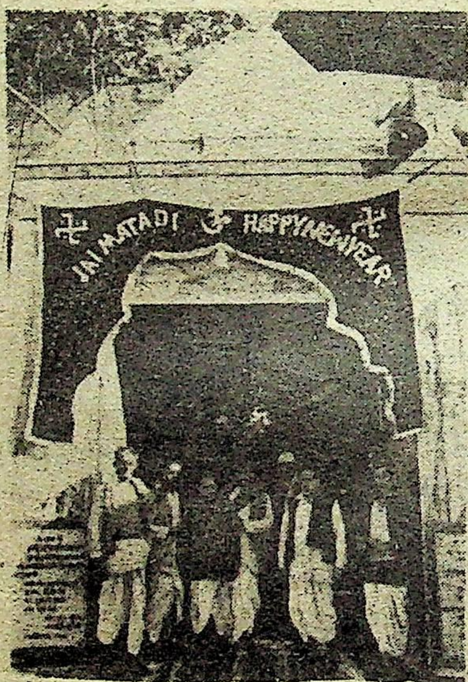
इस कथा के आधार पर यात्री मां के दर्शनों के बाद श्री भैरों मन्दिर की ओर जाते हैं। जिस स्थान पर भैरों नाथ का सिर गिरा था उसी जगह भैरों मंदिर का निर्माण

हुआ है। सांझीछत से मन्दिर १.५ किलोमीटर है आस-पास एक दो चाय की दुकानें भी हैं।

दरबार के दर्शन--

उधर भक्त श्रीधर जी का मन कन्या के अचानक भण्डारे से लोप हो जाने के कारण अत्यधिक दुःखी हुआ। उन्होंने खाना-पीना भी त्याग दिया तो एक रात को स्वप्न में वैष्णों देवी ने उन्हें दर्शन दिये और अपने दरबार की यात्रा करवाई। गुफा के अन्दर तीनों महा-शक्तियों का निवास भी दिखलाया। दूसरे दिन प्रातः ही स्वप्न में देखे स्थानों से उनका मन पुलकित था वे अब प्रसन्न रहने लगे और यथावत भोजन करते थे परन्तु भक्त जी उसी दिन से स्वप्न में देखे स्थान की साक्षात खोज में जुट गये। स्वप्न में देखे मार्ग के अनुसार एक दिन खोजते २ उन्होंने गुफा को भी खोज निकाला और उसका खूब प्रचार करते रहे। उनको वरदान के अनुसार चार पुत्र रत्न भी मिले। आज तक भी उन्हीं का वंश माँ की पूजा करता आ रहा है।

जिन-जिन भक्तों ने दर्शन किए उनकी मनोकामनायें पूरी होती रही। प्रचार बढ़ता रहा, धीरे-धीरे हजारें लाखों यात्री प्रतिवर्ष दर्शनों की अभिलाषा लेकर यहां आने लगे।



माता का दरबार

पर्वत के आंचल में मां का दरबार भैरों मन्दिर से २.५ किलोमीटर है। वहां कई बड़ी-बड़ी धर्मशालायें बन

चुकी हैं। ओढ़ने-बिछाने के कम्बल २४ घण्टे धर्मार्थ संस्थाओं द्वारा प्राप्त हैं। होटल चाय, पूरी आदि की कई दुकानें हैं। डाक तार व टेलीफोन आदि की भी सुविधा है।

गुफा के अन्दर पिण्डी दर्शन—

गुफा में प्रवेश करने से पहले स्नान करने का नियम है। स्नान के लिए गुफा में बहने वाली चरण गंगा की धारा बाजार के अन्त में है। वहीं स्नान के लिए अच्छा स्थान भी है।

गुफा के द्वार पर ही बड़ा पत्थर है। जिसे भैरों का धड़ कहते हैं। उसी के ऊपर से लेटकर गुफा में प्रवेश करना होता है। लगभग १० मीटर लम्बी इस गुफा में प्रवेश करते ही नीचे शीतल जल की धारा पैरों को छूती है। पूरी गुफा में कहीं भी सीधे या सुविधानुसार खड़ा नहीं हुआ जा सकता वास्तव में गुफा के आकार प्रकार अथवा उसकी अन्दर की शोभा के ढंग को किसी भी प्रकार व्यक्त नहीं किया जा सकता। जिन्हें दर्शनों का

सौभाग्य मिला है, वे ही जान पाते हैं। गुफा के अन्त में महालक्ष्मी, महासरस्वती और महाकाली तीन भव्य पिंडियों के रूप में विराजमान हैं। कुछ लोग इन तीनों पिण्डियों



गुफा में पिण्डी दर्शन

के बीच वाली को माता वैष्णों देवी भी कहते हैं। यहां ४-५ व्यक्तियों के बठने योग्य स्थान है। वहीं बैठे पुजारी भेंट आदि लेकर पूजन करवा देते हैं। दर्शन कर नई गुफा में वापिस आना होता है बाहर आकर अधिकांश लोग कन्या पूजन करते हैं और हलवा पूरी आदि बांटते हैं।

इस प्रकार माता वैष्णों देवी दरबार, भवन और गुफा के पवित्र दर्शनों का पुण्य लूटकर यात्री वापिस कटरा के लिए प्रस्थान करते हैं। वापिसी में भैरों मन्दिर के दर्शन किये जाते हैं। जैसा कि पहले लिखा जा चुका है।

सूर्य कुण्ड--

गुफा के ठीक ऊपर की ओर ६ किलो मीटर की दूरी पर स्थित इस स्थान से सूर्योदय का दृश्य बहुत ही सुन्दर दिखाई पड़ता है।

रसायन गुफा--

गुफा में जो चरण गंगा बहती है। उसी चरण गंगा

के किनारे-किनारे इस गुफा तक का मार्ग है। इस गुफा में भगवती की मूर्तियों के अलावा विष्णु, सीता, राम, राधा, कृष्ण, शालीग्राम आदि अनेक देवताओं की मूर्तियां हैं। यह दरबार से ६ मी० ३ कि० है। यहां से होकर बाबा जित्तो के लिये भी रास्ता जाता है।

वैष्णों देवी की नई गुफा--

यात्रियों की सुविधा के लिए इस नई गुफा का निर्माण हुआ है। प्रवेश द्वार छोटा होने के कारण यात्रियों को दर्शन करने के पश्चात् वापिस आने में काफी समय लग जाता था, जिससे अन्य यात्रियों को बड़ी देर तक प्रतीक्षा करनी पड़ती थी तथा सीमित संख्या में ही लोग दर्शन कर पाते थे। इस गुफा के बन जाने से अब भक्तों को अधिक देर तक प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ती तथा भीड़ के दिनों में अधिक संख्या में यात्री दर्शन कर सकें। १३ अप्रैल १९७७ को इस गुफा का उद्‌घाटन समारोह सम्पन्न हुआ।

—*—

प्रमुख दूरियां और ऊंचाई के लिए सारिणी

स्थान	परस्पर दूरी	समुद्र तल से ऊंचाई
कटरा	——	२५०० फुट
दर्शनी दरवाजा	१ कि. मी.	२७०० "
बाण गंगा	१ कि. मी.	२८०० "
चरण पादुका	१.५ कि. मी.	३३८० "
आदिकुमारी	४.५ कि. मी.	४७८० "
हाथी मत्था	२.५ कि. मी.	६५०० "
सांझी छत	२.० कि. मी.	७२०० "
भैरव मन्दिर	१.५ कि. मी.	६५८३ "
वैष्णों भवन	२.५ कि. मी.	५२०० "

नोट—हाथी मत्था से आगे दिल्ली वाली छबीली होकर एक नया छोटा मार्ग भी गया है। अधिकतर यात्री इसी मार्ग से दरबार जाते हैं। इससे लगभग दो किलोमीटर दूरी कम हो जाती है तथा काफी चढ़ाई भी कम हो जाती है। भैरव मन्दिर के दर्शन वापिसी में किये जाते हैं। कटरा से वैष्णव देवी दरबार तक (दिल्ली वाली छबीली होकर) कुल दूरी १४ किलोमीटर रह जाती है।

माता वैष्णों के दरबार में दोनों समय निम्न आरती द्वारा पूजन किया जाता है।

कैसी यह देर लगाई है दुर्गे।
हे मात मेरी हे मात मेरी ॥
भव सागर में गिरा पड़ा हूँ।
काम आदि में घिरा पड़ा हूँ ॥
मोह आदि जालमें जकड़ा पड़ा हूँ।
हे मात मेरी हे मात मेरी ॥
न मुझमें बल न मुझ में विद्या।
न मुझ में भक्ति न मुझ में शक्ति ॥
शरन तुम्हारी गिर पड़ा हूँ।
हे मात मेरी हे मात मेरी ॥
न कोई मेरा कुटुम्ब साथी।
न ही मेरा शरीर साथी ॥
चरण कमल को नौका बनाकर।
मैं पार हूँगा खुशी मनाकर ॥
यमदूतों को मार भगाकर।

हे मात मेरी हे मात मेरी ।।

आप ही उभारो पकड़ के बाहीं ।

हे मात मेरी हे मात मेरी ।।

सदा ही तेरे गुणों को गाऊं ।

सदा ही तेरे स्वरूप को ध्याऊं ।।

नित प्रति तेरे गुणों को गाऊं ।

हे मात मेरी हे मात मेरी ।।

न मैं किसी का न कोई मेरा ।

छाया है चारों तरफ अन्धेरा ।

पकड़ के ज्योति दिखादो रास्ता ।

हे मात मेरी हे मात मेरी ।।

शरण में पड़े हैं हम तुम्हारी ।

करो यह नैया पार हमारी ।।

कैसी यह देर लगाई है दुर्गे ।

हे मात मेरी हे मात मेरी ।।



ध्यानू भक्त की कथा

जिन दिनों भारत में मुगल सम्राट अकबर का शासन था, उन्हीं दिनों की यह घटना है। निदौन ग्राम निवासी माता का एक सेवक ध्यानू भगत एक हजार यात्रियों सहित माता के दर्शन के लिए जा रहा था। इतना बड़ा दल देखकर बादशाह के सिपाहियों ने चांदनी चौक दिल्ली में उन्हें रोक लिया और अकबर के दरबार में ले जाकर ध्यानू भक्त को पेश किया।

बादशाह ने पूछा—तुम इतने आदमियों को साथ लेकर कहां जा रहे हो ?

ध्यानू ने हाथ जोड़कर उत्तर दिया—मैं ज्वाला माई के दर्शन के लिए जा रहा हूँ। मेरे साथ जो लोग हैं, वह भी माता के भक्त हैं और यात्रा पर जा रहे हैं।

अकबर ने यह सुनकर कहा—यह ज्वाला माई कौन है ? और वहां जाने से क्या होगा ?

ध्यानू भक्त ने उत्तर दिया—महाराज ! ज्वाला माई संसार की रचना एवं पालन करने वाली माता है। वे भक्तों के सच्चे हृदय से की गई प्रार्थनायें स्वीकार करती हैं तथा उसकी सब मनोकामनायें पूर्ण करती हैं। उनका

प्रताप ऐसा है कि उनके स्थान पर बिना तेल-बत्ती के ज्योति जलती रहती है। हम लोग प्रतिवर्ष उनके दर्शन करने जाते हैं।

अकबर बादशाह बोले—तुम्हारी ज्वाला माई इतनी ताकतवर है, इसका यकीन हमें किस तरह आये? आखिर तुम माता के भक्त हो अगर कोई करिश्मा हमें दिखाओ तो हम भी मान लेंगे।

ध्यानू ने नम्रता से उत्तर दिया—श्रीमान! मैं तो माता का एक तुच्छ सेवक हूँ, मैं भला कोई चमत्कार कैसे दिखा सकता हूँ?

अकबर ने कहा—अगर तुम्हारी बन्दगी पाक व सच्ची है तो देवी माता जरूर इज्जत रखेगी। अगर वह तुम जैसे भक्तों का ख्याल न रखे तो फिर तुम्हारी इबादत का क्या फायदा है? या फिर वह देवी ही यकीन के काबिल नहीं, या तुम्हारी इबादत (भक्ति) ही झूठी है। इम्तिहान के लिए हम तुम्हारे घोड़े की गर्दन अलग किए देते हैं, तुम अपनी देवी से कहकर उसे दुबारा जिन्दा करवा लेना।

इस प्रकार घोड़े की गर्दन काट दी गई।

ध्यानू भक्त ने कोई उपाय न देखकर बादशाह से एक माह की अवधी तक घोड़े के सिर व धड़ को सुरक्षित

रखने की प्रार्थना की। अकबर ने ध्यानू भक्त की बात मान ली। यात्रा करने की अनुमती भी मिल गई।

बादशाह से विदा होकर ध्यानू भक्त अपने साथियों



ध्यानू भक्त का देवी को शीश भेंट चढ़ाते हुए

सहित माता के दरबार में जा उपस्थित हुआ। स्नान पूजन आदि करने के उपरान्त रात भर जागरण किया। प्रातः काल आरती के समय हाथ जोड़कर ध्यानू ने प्रार्थना की हे मातेश्वरी ! आप अन्तर्यामी हैं। बादशाह मेरी भक्ति की परीक्षा ले रहा है, मेरी लाज रखना, मेरे घोड़े को अपनी कृपा व शक्ति से जीवित कर देना, चमत्कार प्रकट करना अपने सेवक को कृतार्थ करना। यदि आप मेरी प्रार्थना स्वीकार न करेंगी तो मैं भी अपना सिर काटकर आपके चरणों में अर्पित कर दूंगा, क्योंकि लज्जित होकर जीने से मर जाना अधिक अच्छा है। यह मेरी प्रतिज्ञा है। आप उत्तर दें—

कुछ समय तक मौन रहा।

कोई उत्तर न मिला।

इसके पश्चात् भक्त ने तलवार से अपना शीश काट कर देवी को भेंट कर दिया।

उसी समय साक्षात् माता प्रकट हुई और ध्यानू भक्त का सिर धड़ से जुड़ गया, भक्त जीवित हो गया। माता ने भक्त से कहा कि दिल्ली पहुँचो। लज्जित होने का कारण निवारण हो गया और जो कुछ इच्छा हो वर मांगो।

ध्यानू भक्त ने माता के चरणों में शीश झुकाकर

प्रणाम कर निवेदन किया—हे जगदम्बे ? आप सर्व शक्तिमान हैं। हम मनुष्य अज्ञानी हैं, भक्ति की विधि भी नहीं जानते। फिर भी विनती करता हूँ कि जगमाता आप अपने भक्तों की इतनी कठिन परीक्षा न लिया करें, प्रत्येक संसारी भक्त आपको शीश भेंट नहीं दे सकता। कृपा करके हे मातेश्वरी ! किसी साधारण भेंट से ही आप अपने भक्तों की मनोकामनायें पूर्ण किया करो।

'तथास्तु ! अब से मैं शीश के स्थान पर केवल नारियल की भेंट व सच्चे हृदय से की गई प्रार्थना द्वारा ही मनोकामना पूर्ण करूंगी।' यह कहकर माता अन्तर्ध्यान हो गई।

इधर तो यह घटना घटी, उधर दिल्ली में जब मृत घोड़े के सिर व धड़ माता की कृपा से, अपने आप जुड़ गये तो सब दरबारियों सहित बादशाह अकबर आश्चर्य में डूब गये। बादशाह ने कुछ सिपाहियों को ज्वाला जी भेजा। सिपाहियों ने वापिस आकर अकबर को सूचना दी वहां जमीन में से रोशनी की लपटें निकल रही हैं, शायद उन्हीं की ताकत से यह करिश्मा हुआ। अगर आप हुक्म दें तो इन्हें बन्द करवा दें। इस तरह हिन्दुओं की इबादत की जगह ही खत्म हो जायेगी।

अकबर ने स्वीकृति दे दी। शाही सिपाहियों ने सर्व-प्रथम माता की पवित्र ज्योति के ऊपर लोहे के मोटे-मोटे तवे रखवा दिये। परन्तु दिव्य ज्योति तवे फोड़कर ऊपर निकल आई। इसके पश्चात् एक नहर का वहाव उस ओर छोड़ दिया गया। जिससे नहर का पानी निरन्तर ज्योति के ऊपर तिरता रहे फिर भी ज्योति का जलना बन्द न हुआ शाही सिपाहियों ने अकबर को सूचना दे दी जोतों का जलना बन्द नहीं हो सकता, हमारी सारी कोशिशें नाकाम हो गईं। आप जो मुनासिब हो करें।

इस समाचार को पाकर बादशाह अकबर ने दरबार के विद्वान् ब्राह्मणों से परामर्श किया। ब्राह्मणों ने विचार करके कहा कि आप स्वयं जाकर देवी चमत्कार देखें तथा नियमानुसार भेंट आदि चढ़ाकर देवी माता को प्रसन्न करें। बादशाह के लिए दरबार जाने का नियम यह है कि स्वयं अपने कंधे पर सवा मन शुद्ध सोने का छत्र लाद कर नंगे पैरों माता के दरबार में जायें। तत्पश्चात् स्तुति आदि करके माता से क्षमा मांग लें।

अकबर ने ब्राह्मणों की बात मान ली। सवा मन पक्का सोने का भव्य छत्र तैयार हुआ। फिर वह छत्र अपने कन्धे पर रखकर नंगे पैरों बादशाह ज्वाला जी पहुँचे वहां दिव्य ज्योति के दर्शन किए। मस्तक श्रद्धा से झुक गया। अपने पर पश्चाताप होने लगा। सोने का छत्र कंधे से उतार कर रखने का उपक्रम किया परन्तु छत्र गिर कर टूट गया। कहा जाता है कि वह सोने का न रहा, किसी विचित्र धातु का बन गया, जो न लोहा था, और न पीतल न तांबा न सीसा।

अर्थात् देवी ने भेंट अस्वीकर कर दी।

इस चमत्कार को देखकर अकबर ने अनेक प्रकार से स्तुति करते हुए माता से क्षमा की भीख मांगी और अनेक प्रकार से माता की पूजा आदि करके दिल्ली वापिस लौटा आते ही अपने सिपाहियों को सभी भक्तों से प्रेम पूर्वक व्यवहार करने का आदेश निकाल दिया।

अकबर बादशाह द्वारा चढ़ाया गया खण्डित छत्र माता के दरबार के बांई ओर आज भी पड़ा हुआ देखा जा सकता है।

* बोलो सांचे दरबार की जय *

तारा रानी की कथा

माता के जगराते में महारानी तारादेवी की क॰ कहने-सुनने की परम्परा प्राचीन काल से ही चली आ॰ है। बिना इस कथा के जागरण को सम्पूर्ण नहीं मान॰ जाता है। यद्यपि पुराणों या ऐतिहासिक पुस्तकों इसका कोई उल्लेख नहीं है, तथा माता के प्रत्येक जागर॰ में इसको सम्लिमति करने की परम्परागत विधान है कथा इस प्रकार है—

महाराजा दक्ष की दो पुत्रियां तारादेवी एवं रुकम॰ भगवती दुर्गा जी की भक्ति में अटूट विश्वास रखती थीं दोनों बहिनें नियमपूर्वक एकादशी का व्रत किया कर॰ थीं तथा माता के जागरण में प्रेम के साथ कीर्तन ए॰ महात्म्य कहा-सुना करती थीं।

एकादशी के दिन एक ॰र भूल से छोटी बहि॰ रुकमण ने मांसाहार कर लिया। जब तारादेवी को प॰ लगा तो उसे रुकमण पर बड़ा क्रोध आया और बोली— तू है तो मेरी बहिन, परन्तु मनुष्य देही पाकर भी तू

नीच योनि के प्राणी जैसा कर्म किया, तू तो छिपकली बनने योग्य है। बड़ी बहिन के मुख से निकले शब्दों को रुक्मण ने शिरोधार्य कर लिया और साथ ही प्रायश्चित का उपाय पूछा। तारा ने कहा—त्याग एवं परोपकार से सब पाप छुट जाते हैं।

दूसरे जन्म में तारा देवी इन्द्रलोक की अप्सरा बनी और छोटी बहिन रुक्मण छिपकली योनि में प्रायश्चित का अवसर ढूंढने लगी।

द्वापर युग में जब पांच पाण्डवों ने अश्वमेध यज्ञ किया तब उन्होंने दूत भेजकर दुर्वासा ऋषि सहित तैंतीस करोड़ देवताओं को निमन्त्रण दिया। जब दूत दुर्वासा ऋषि के स्थान पर निमन्त्रण लेकर गया तो दुर्वासा ऋषि बोले—यदि तैंतीस करोड़ देवता उस यज्ञ में भाग लेंगे तो मैं उसमें सम्मिलित नहीं हो सकता। दूत तैंतीस करोड़ देवताओं को निमन्त्रण देकर वापिस पहुँचा और दुर्वासा ऋषि का वृतांत पाण्डवों को कह सुनाया कि वह सब देवताओं को बुलाने पर नहीं आयेंगे।

यज्ञ प्रारम्भ हुआ। तैंतीस करोड़ देवता यज्ञ में भाग लेने आये उन्होंने दुर्वासा ऋषिजी को न देखकर पाण्डवों से पूछा कि ऋषि को क्यों नहीं बुलवाया। इस पर पांडवों ने नम्रता सहित उत्तर दिया कि निमन्त्रण भेजा था। परन्तु वे अहंकार के कारण नहीं आए। यज्ञ में पूजन, हवन आदि निर्विघ्न समाप्त हुए। भोजन के लिए भंडारे की तैयारी होने लगी।

दुर्वासा ऋषि ने जब देखा कि पाण्डवों ने उनकी उपेक्षा कर दी है तो उन्होंने अत्यन्त क्रोध करके पक्षी का रूप धारण किया और चोंच में सर्प लेकर भण्डारे में फेंक दिया। जिसका किसी को कुछ भी पता नहीं चला। वह सर्प खीर की कढ़ाई में गिरकर छिप गया।

एक छिपकली (जो पिछले जन्म में तारादेवी की छोटी बहिन थी। बहिन के शब्दों को शिरोधार्य कर इस जन्म में छिपकली बनी) सर्प का भण्डारे में गिरना देख रही थी। उसे त्याग व परोपकार की शिक्षा अब तक याद थी। यह छिपकली घर की दीवार पर चिपकी समय की प्रतीक्षा

करती रही। कई लोगों की जान बचाने हेतु उसने अपने प्राण न्यौछावर कर देने का मन ही मन निश्चय किया जब खीर भण्डारे में दी जाने वाली थी तो सबकी आंखों के सामने वह छिपकली दीवार से कूदकर कढ़ाई में जा गिरी।

निदान लोग छिपकली को बुरा भला कहते हुए खीर के कढ़ाये को खाली करने लगे, उस समय उन्होंने उसमें मरे हुए एक सांप को देखा। अब सबको मालूम हुआ कि छिपकली ने अपने प्राण देकर उन सबके प्राणों की रक्षा की है इस प्रकार उपस्थित सभी सज्जनों और देवताओं ने उस छिपकली के लिए प्रार्थना की कि उसे सब योनियों में उत्तम मनुष्य जन्म प्राप्त हो तथा अन्त में मोक्ष को प्राप्त करें।

तीसरे जन्म में छिपकली राजा 'सपरश' के घर कन्या बनी दूसरी बहिन तारादेवी ने फिर मनुष्य का जन्म लेकर तारामती नाम से अयोध्या के प्रतापी राजा हरिश्चन्द्र के साथ विवाह किया।

राजा सपरश ने ज्योतिषियों से कन्या की कुण्डली बनवाई। ज्योतिषियों ने राजा को बताया कि कन्या

राजा के लिए हानिकारक सिद्ध होगी, शकुन ठीक नहीं है अतः आप इसे मरवा दीजिए। राजा बोला—लड़की को मारने का पाप बहुत बड़ा है। मैं उस पाप का भागी नहीं बन सकता। तब ज्योतिषियों ने विचार करके राय दी—हे राजन्! आप एक लकड़ी के सन्दूक में ऊपर से सोना-चांदी आदि जड़वा दें। फिर उस सन्दूक के भीतर लड़की को बन्द करके नदी में प्रवाहित कर दीजिए। सोना-चांदी जड़ित लकड़ी का सन्दूक अवश्य ही कोई लालच से निकाल लेगा और आपकी कन्या को भी पाल लेगा। आपको किसी प्रकार का पाप न लगेगा। ऐसा ही किया गया और नदी में बहता हुआ सन्दूक काशी के समीप एक भङ्गी को दिखाई दिया।

वह सन्दूक को नदी से बाहर निकाल लाया। जब खोला तो सोना-चांदी के अतिरिक्त अत्यन्त रूपवान कन्या दिखाई दी। उस भंगी के कोई सन्तान नहीं थी। जब उसने अपनी पत्नी को वह कन्या दी तो उसकी खुशी का ठिकाना न रहा। उसने अपनी सन्तान के समान ही बच्ची को छाती से लगा लिया। भगवती की कृपा से उसके स्तनों

में दूध उतर आया। पति-पत्नी दोनों ने प्रेम से कन्या का नाम 'रुक्को' रख दिया।

जब वह कन्या विवाह योग्य हुई तो भङ्गी ने उसका विवाह अयोध्या के सजातिय युवक के साथ बड़ी धूमधाम से किया। इस प्रकार पहले जन्म की रुकमण, दूसरे जन्म में छिपकली तथा तीसरे जन्म में 'रुक्को' बन गई।

रुक्को की सास महाराज हरिश्चन्द्र के घर सफाई आदि का काम करने जाया करती थी। एक दिन वह बीमार पड़ गई। निदान रुक्को महाराज हरिश्चन्द्र के घर काम करने के लिए पहुँच गई। महाराजा की पत्नी तारामती ने जब रुक्को को देखा तो वह अपने पूर्व जन्म के पुण्य से उसे पहिचान गई। तब तारामती ने रुक्को से कहा—हे बहन! तुम यहां मेरे निकट आकर बैठो। महारानी की बात सुनकर रुक्को बोली—रानी जी! मैं नीच जाति की भंगिन हूँ, भला मैं आपके पास कैसे बैठ सकती हूँ।

तब तारामती ने कहा—बहिन! पूर्व जन्म में तुम मेरी सगी बहिन थी। एकादशी का व्रत खण्डित करने के

कारण तुम्हें छिपकली की योनि में जाना पड़ा। जो होना था सो हो चुका। अब तुम अपने इस जन्म को सुधारने का उपाय करो तथा भगवती माता की सेवा करके अपना जन्म सफल बनाओ।

यह सुनकर रुक्को को बड़ी प्रसन्नता हुई और उसने उसका उपाय पूछा। रानी ने बताया कि वैष्णों माता जब मनोरथों को पूरा करने वाली है जो लोग श्रद्धापूर्वक माता का पूजन व जागरण करते हैं, उनकी सब मनो-कामनायें पूर्ण होती हैं।

रुक्को ने खुश होकर माता की मनोती करते हुए कहा—हे माता! यदि आपकी कृपा से मुझे एक पुत्र प्राप्त हो जाए तो मैं भी आपका पूजन व जागरण करवाऊंगी। प्रार्थना को माता ने स्वीकार कर लिया, फलस्वरूप दसवें महीने उसके गर्भ से एक अत्यन्त सुन्दर बालक ने जन्म लिया। परन्तु दुर्भाग्यवश रुक्को को माता का पूजन व जागरण करने का ध्यान ही न रहा। परिणाम यह हुआ कि जब वह बालक पांच वर्ष का हुआ तो एक दिन उसे तेज बुखार आ गया और तीसरे दिन उसे चेचक (माता) निकल आई।

रुक्को दुःखी होकर अपने पूर्व जन्म की बहिन तारा मती के पास गई और बच्चे की बीमारी का सब वृत्तान्त कह सुनाया। तब तारामती ने कहा—तू जरा ध्यान करके देख कि तुझसे माता के पूजन में कोई भूल तो नहीं हुई।

इस पर रुक्को को छः वर्ष पहले की बात का ध्यान आ गया और उसने अपना अपराध स्वीकार किया कि बच्चे को आराम आने पर अवश्य जागरण करवाऊंगी।

भगवती की कृपा से बच्चा दूसरे ही दिन ठीक हो गया। तब रुक्को ने देवी के मन्दिर में जाकर पण्डित से कहा कि मुझे अपने घर माता का जागरण करना है, सो आप मंगलवार को मेरे घर पधार कर कृतार्थ करें। पण्डित जी बोले—अरी रुक्को, तू यहीं पांच रुपये दे जा, हम तेरे नाम से मन्दिर में ही जागरण करवा देंगे। तू नीच जाति की स्त्री है। इसलिए हम तेरे घर में जाकर देवी का जागरण नहीं कर सकते।

रुक्को ने कहा—हे पण्डित जी माता के दरबार में तो ऊंच-नीच का कोई विचार नहीं होता वे तो सब भक्तों पर समान रूप से कृपा करती है। अतः आपको कोई

ऐतराज नहीं होना चाहिए। इस पर पण्डितों ने आपस में विचार करके कहा—यदि महारानी तारामती तुम्हारे जागरण में पधारे तो हम भी स्वीकार कर लेंगे।

यह सुनकर रुक्को महारानी के पास गई और सब वृत्तान्त कह सुनाया। तारामती ने जागरण में सम्मिलित होना सहर्ष स्वीकार कर लिया। जिस समय रुक्को पंडित से यह कहने गई कि महारानी जी जागरण में आवेंगी। उस समय सैननाई ने सुन लिया और महाराज हरिश्चन्द्र को जाकर सूचना दी।

राजा ने सननाई से सब बात सुनकर कहा कि तेरी बात झूठी है। महारानी भंगियों के घर जागरण में नहीं जा सकती फिर भी परीक्षा लेने के लिए राजा ने रात को अपनी उंगली पर थोड़ा चीरा लगा लिया जिससे नींद न आवे। रानी तारामती ने जब यह देखा कि जागरण का समय हो रहा है परन्तु महाराज को नींद नहीं आ रही तो उसने माता वैष्णों से मन ही मन प्रार्थना की कि हे माता! आप किसी उपाय से राजा को सुला दें ताकि मैं जागरण में सम्मिलित हो सकूं।

जब राजा को नींद आ गई तो रानी तारामती ने रोशनदान से रस्सी बांधकर महल से उतरी और रुक्को के घर जा पहुँची।

उस समय जल्दी के कारण रानी के हाथ का रेशमी रूमाल तथा पांव की एक पायल रास्ते में गिर पड़ी। उधर थोड़ी देर बाद राजा हरिश्चन्द्र की नींद खुल गई। तब वह भी रानी का पता लगाने निकल पड़ा। मार्ग में पायल और रूमाल उसने देखे और जागरण वाले स्थान पर जा पहुँचा। राजा ने दोनों चीजें रास्ते से उठाकर अपने पास रख लीं और जहां जागरण हो रहा था, वहां एक कोने में चुपचाप बैठकर सब दृश्य देखने लगा।

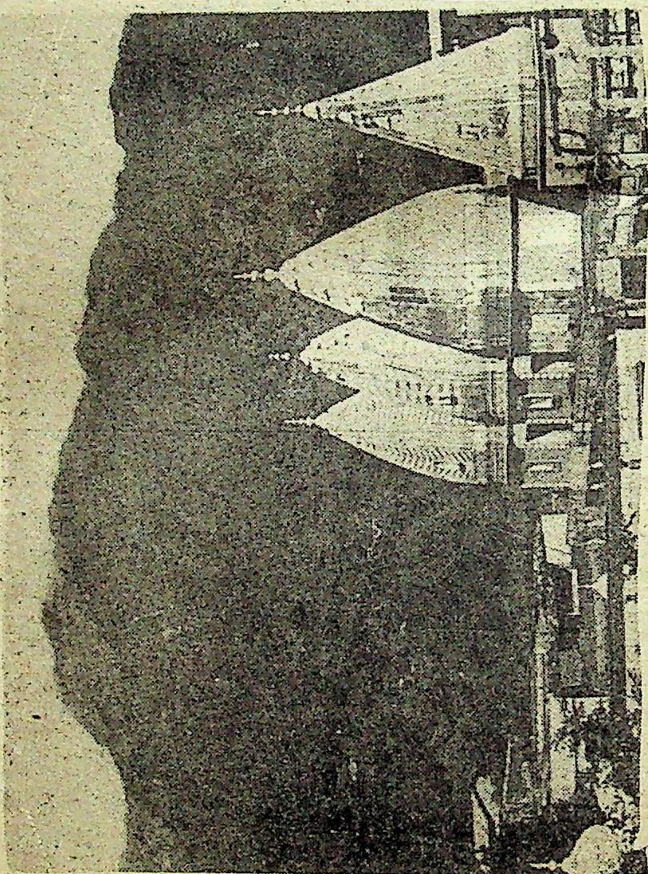
जब जागरण समाप्त हुआ तो सबने माता की आरती व अरदास की। उसके बाद प्रसाद बांटा गया। रानी तारामती को जब प्रसाद मिला तो उसने झोली में रख लिया। यह देखकर लोगों ने पूछा आपने प्रसाद क्यों नहीं खाया यदि आप न खावेंगी तो कोई भी प्रसाद नहीं खायेगा। रानी बोली—तुमने जो प्रसाद दिया वह मैंने महाराज के लिए रख लिया। अब मुझे मेरा प्रसाद दे दो अब की बार प्रसाद लेकर तारा ने खा लिया। इसके बाद सब भक्तों ने माता का प्रसाद खाया।

इस प्रकार जागरण समाप्त करके, प्रसाद खाने के पश्चात् रानी तारामती घर की ओर चली। तब राजा ने आगे बढ़कर रास्ता रोक लिया और कहा—तूने नीचों के घर का प्रसाद खाकर अपना धर्म नष्ट कर लिया है, अब मैं तुझे अपने घर कैसे रखूं। तूने तो कुल की मर्यादा व मेरी प्रतिष्ठा का भी कोई ध्यान नहीं रखा। जो प्रसाद तू अपनी झोली में रखकर मेरे लिए लाई है उसे खिला कर मुझे भी अपवित्र करना चाहती है। ऐसा कहते हुए जब राजा ने झोली की ओर देखा तो भगवती की कृपा से प्रसाद के स्थान पर उसमें चम्पा, गुलाब, गेंदा के फूल कच्चे चावल और सुपारियां दिखाई दीं।

यह चमत्कार देखकर राजा आश्चर्यचकित रह गया राजा हरिश्चन्द्र रानी तारा को साथ लेकर वापिस लौट आया। वहां रानी ने ज्वाला मैया की शक्ति से बिना किसी माचिस या चकमक पत्थर की सहायता लिए राजा को अग्नि प्रज्वलित करके दिखाई, जिसे देखकर राजा का आश्चर्य और बढ़ गया। राजा के मन में भी देवी के प्रति विश्वास तथा श्रद्धा जाग उठी।

इसके बाद राजा ने रानी से कहा—मैं माता के प्रत्यक्ष दर्शन करना चाहता हूँ। रानी बोली—प्रत्यक्ष दर्शन पाने के लिए बहुत बड़ा त्याग होना चाहिए यदि आप अपने

पुत्र रोहितास की बलि दे सकें तो आपको दुर्गा देवी के प्रत्यक्ष दर्शन भी प्राप्त हो सकते हैं। राजा के मन में देवी के दर्शन की लगन हो गई थी। राजा ने पुत्र का



मोह त्याग कर रोहितास का सिर देवी को अर्पण कर दिया! ऐसी सच्ची श्रद्धा एवं विश्वास देख दुर्गा मा

सिंह पर सवार होकर उसी समय वहां प्रकट हो गई और राजा हरिश्चन्द्र दर्शन करके कृतार्थ हुए मरा हुआ पुत्र भी जीवित हो गया। यह चमत्कार देख राजा हरिश्चन्द्र गद्‌गद् हो गया। उन्होंने विधिपूर्वक माता का पूजन करके अपराधों की क्षमा मांगी। सुखी रहने का आशीर्वाद देकर माता अन्तर्ध्यान हो गई।

राजा ने तारा रानी की भक्ति की प्रशंसा करते हुए कहा—हे तारा मैं तुम्हारे आचरण से अति प्रसन्न हूँ। मेरे धन्य भाग, जो तुम मुझे पत्नी के रूप में प्राप्त हुई। उसके पश्चात् राजा हरिश्चन्द्र ने रानी तारा देवी की इच्छानुसार अयोध्यापुरी में माता का एक भव्य मन्दिर तैयार करवाया रानी तारादेवी एवं रुक्मन भंगिन दोनों ही मनुष्य योनि से छूटकर देवलोक को प्राप्त हुई।

माता के जागरण में रानी तारा की इस कथा को जो मनुष्य भक्ति पूर्वक पढ़ता या सुनता है, उसकी सभी मनोकामनायें पूर्ण होती हैं, सुख एवं स्मृद्धि बढ़ती है, शत्रुओं का नाश एवं सर्व मंगल होता है। इस कथा के बिना जागरण पूरा नहीं माना जाता।

॥ बोलो सांचे दरबार की जय ॥

देवी के नवरात्रों की व्रत कथा

राजा चन्द्रदेव की कथा

जम्मू के महाराज चन्द्रदेव बड़े धर्मात्मा और दानी थे। उनके यहां हजारों दीन-दुखी नित्य भोजन पाते थे। राजा को किसी भी प्रकार की कमी न थी। उनके कोई सन्तान न थी, बस यही दुख था। एक दिन राजा-रानी हरिद्वार स्नान करने गए तब वहां उनकी भेंट महात्मा हंसदेव जी से हुई। महात्मा अन्तर्यामी थे, वे राजा के दुःख को जानकर बोले—राजन् अगर तुम चण्डी देवी का यज्ञ करो तो तुम्हें सन्तान प्राप्त हो सकती है। महात्मा जी की आज्ञा मानकर वापिस आकर उन्होंने चण्डी यज्ञ करवाया।

मां चण्डी की कृपा से उन्हें उसी साल एक कन्या हुई। उसका नाम चन्द्रभागा रखा गया। दूसरे ही वर्ष उनके एक पुत्र भी हुआ, जिसका नाम चन्द्रशील रखा गया।

कन्या के युवा होने पर उसका विवाह महेशपुर के

राजकुमार के साथ हो गया। कुछ समय बाद चन्द्रशील का विवाह था तो महात्मा हंसदेव जी भी जम्मू पधारे। वहां उन्होंने राजकुमारी चन्द्रभागा का ललाट देखकर कहा कि ये सातवें दिन विधवा हो जायेगी। इस पर सब सम्बन्धी महात्मा जी के चरणों में गिरकर उपाय पूछने लगे। हंसदेव जी ने कहा—यहाँ त्रिकूट पर्वत पर माता वैष्णों देवी का निवास है उनकी कृपा हो जाये तो मौत टल सकती है।

ठीक एक सप्ताह बाद ही राजकुमार शांताकार के सिर पर पेड़ की डाल गिरने से उनका देहान्त हो गया, चारों ओर शोक फैल गया। तब चन्द्रभागा ने प्रण किया कि जब तक वैष्णों देवी उसके पति को जीवित न करेगी वह भोजन न करेगी। इसके बाद उसने पति के शव को भी सुरक्षित रखवा दिया। निराहार व्रत करते हुए चन्द्रभागा को नौ दिन बीत गए। दसवें दिन देवी ने प्रसन्न होकर दर्शन दिये और वर मांगने को कहा। चन्द्रभागा ने कहा कि पति के बिना मैं कोई वर मांगने की अधिकारी नहीं हो सकती। इस पर देवी ने शांताकार को

जीवित कर दिया तो चन्द्रभागा ने वर मांगा कि युगों तक देवी उन्हीं के राज्य में निवास करें तथा अपनी कृपा सदैव बनाए रखें।

इसी कारण से आज भी भारतीय नारियां घर में जौ बीजती हैं और नौ दिन व्रत रखकर अपने सुहाग की मंगल कामना करती हैं। इन्हीं दिनों को नवरात्र कहते हैं। इनमें तीर्थ यात्रा एवं देवी के दर्शनों का विशेष फल माना जाता है।

—:o:—

आरती श्री वैष्णों देवी जी की

सुन मेरी देवी पर्वत वासिनी,
तेरा पार ना पाया।
पान सुपारी ध्वजा नारियल,
ले तेरी भेंट चढ़ाया।
सुआ चोली तेरी अंग विराजे,
केशर तिलक लगाया।

ब्रह्मा वेद पढ़े तेरे द्वारे,
शंकर ध्यान लगाया।
सुन मेरी देवी पर्वत वासिनी··

राजा भैरों चंवर ढुलावे,
लंगूर वीर का पहरा।
ऊंचे पर्वत भवन है मां का,
झण्डा लाल सुनहरा।
सुन मेरी देवी पर्वत वासिनी··

सुन्दर गुफा है मात तुम्हारी,
शीश पे छत्र विराजे।
गंगा बहे चरणों में,
मधुर घण्टा ध्वनि बाजे।
सुन मेरी देवी पर्वत वासिनी··

जो जन निश्चय करे माता,
तेरे द्वार है आवे।
मुंह मंगियां मुरादां पावे,
जन्म सफल हो जावे।
सुन मेरी देवी पर्वत वासिनी··

नौ देवियां की अमर कहानी—



श्री दुर्गा जी की नौ मूर्तियां हैं जिन्हें नव दुर्गा कहते हैं। उनके नाम इस प्रकार हैं—

१. शैल पुत्री
२. ब्रह्मचारिणी
३. चन्द्र घण्टा
४. कूष्मांडा
५. स्कन्दमाता
६. कात्यानी
७. कालरात्रि
८. महागौरी
९. सिद्धरात्रि

नव दुर्गा की भेंट

अहो माता जग तारन माया
नौ दुर्गा ने रूप धारा कोई न्यारा-न्यारा
प्रथमे माता शैल पुत्री नाम धराये
गिरी की पुत्री होय शंकर का ध्यान लगाये
भई तपस्या पूर्ण मात ने बहुवर पाये
शिव शंकर कैलाशी को पति बनाये
शिव को पति बनाय के जी रचा ब्याह महाराज
प्रथम शैल पुत्री भयी कीना जग का काज, मात··

द्वितीय अपना रूप ब्रह्म ने आप दिखाया
ज्वालामुखी पहाड़ आन एक स्थान बनवाया
अग्नि रूप हो आय मातु ने खेल रचाया

द्वितीये ब्रह्मचारणी भयी जी सब जग किया प्रकाश
संतजनों की करी पालना दुष्टों का कर नाश, मात··
तृतीय ब्रह्मा विष्णु माई को शीश नवावें
देवन महादेव माई का ध्यान लगावें
इन्द्रादिक सुर देव मात ने सब उपजाये
अपना कार्य करो हम तुम्हें सुनाये
तृतीय चन्द्रघण्टा भई जो तुमरा घंटा शब्द सुनाय
तीन लोक तारन तरन मस्तक चन्द्र सुहाय, मात··
चार कर्म चार वर्ण मातु ने आन बनाये
ब्राह्मण क्षत्री वैश्य शूद्र जिनके नाम धराये
तप करने को मात ब्राह्मण धर्म चलाये
युद्ध विद्या के कारन क्षत्री परम्पराये
वैश्य उदर व्यापार को जी शूद्र को सेवा दीन
कुष्माण्डाते चतुर्थकम चौथा रूप धर लीन, मात··
पांचों देवता बुलाये मात लिए अपने
सकल जगत विख्यात मात की शरनी आये
आज्ञा हमको देउ चरण पर शीश नवाये
तुम तप करने को जाऊ मातु ने वचन सुनाये

तप करने को चल दिये जी ब्रह्मा विष्णु महेश
पंचम स्कन्द मातेति मैं सुमरू आदि गणेश, मात···
सब देवन के हेतु महा माई बन आई बन आई
अंग ज्वालपा मातु ज्वाला की ज्योत सवाई
जल विच दर्शन दिया झलकती कला दिखाई
देख रूप विकराल देवन मन धीरज आई
सभी देव स्तुति करें जी तुम सुनो गरीब निवाज
षष्टम कात्यानी भई राखी भक्त की लाज, मात···
सप्तम काशी रूप कालिका काल बनाओ
धर्मराज धरा नाम धर्म को वचन सुनाओ
असुर बिडारन कारन आप दीवान लगाओ
अपनी भृकुटी खोल काल भैरों उपजाओ
रत्नागिर के आय के जी असुरन खेत बिछाय
सप्तम कालरात्रि बनी रूप न वरना जाय, मात···
सुर-नर मुनिजन सकल देवता मंगल गावें
अष्ट पहर दिन रैन शेष तेरी स्तुति गावें
कर कृपा कृपालु भवानी सब जन ध्यावें
चोला अंग सुहाय सोने का छत्र फिरावें

द्वितीये ब्रह्मचारणी भयी जो सब जग किया प्रकाश
संतजनों की करी पालना दुष्टों का कर नाश, मात··
तृतीय ब्रह्मा विष्णु माई को शीश नवावें
देवन महादेव माई का ध्यान लगावें
इन्द्रादिक सुर देव मात नें सब उपजाये
अपना कार्य करो हम तुम्हें सुनाये
तृतीय चन्द्रघण्टा भई जो तुमरा घंटा शब्द सुनाय
तीन लोक तारन तरन मस्तक चन्द्र सुहाय, मात··
चार कर्म चार वर्ण मातु ने आन बनाये
ब्राह्मण क्षत्री वैश्य शूद्र जिनके नाम धराये
तप करने को मात ब्राह्मण धर्म चलाये
युद्ध विद्या के कारन क्षत्री परम्पराये
वैश्य उदर व्यापार को जी शूद्र को सेवा दीन
कुष्माण्डाते चतुर्थकम चौथा रूप धर लीन, मात··
पांचों देवता बुलाये मात लिए अपने
सकल जगत विख्यात मात की शरनी आये
आज्ञा हमको देउ चरण पर शीश नवाये
तुम तप करने को जाऊ मातु ने वचन सुनाये

तप करने को चल दिये जी ब्रह्मा विष्णु महेश
पंचम स्कन्द मातेति मैं सुमरूं आदि गणेश, मात...
सब देवन के हेतु महा माई बन आई बन आई
अंग ज्वालपा मातु ज्वाला की ज्योत मचाई
जल विच दर्शन दिया झलकती कला दिखाई
देख रूप विकराल देवन मन धीरज आई
सभी देव स्तुति करें जी तुम सुनो गरीब निवाज
षष्टम कात्यानी भई राखी भक्त की लाज, मात...
सप्तम काशी रूप कालिका काल बनाओ
धर्मराज धरा नाम धर्म को वचन सुनाओ
असुर बिडारन कारन आप दीवान लगाओ
अपनी भृकुटी खोल काल भैरों उपजाओ
रत्नागिर के आय के जी असुरन खेत बिछाय
सप्तम कालरात्रि बनी रूप न बरना जाय, मात...
सुर-नर मुनिजन सकल देवता मंगल गावें
अष्ट पहर दिन रैन शेष तेरी स्तुति गावें
कर कृपा कृपालु भवानी सब जन ध्यावें
चोला अंग सुहाय सोने का छत्र फिरावें

अष्टभुजी सिंह वाहिनी जी दानव दल संहार
महा गौरी के भेष में लखियां रूप अपार, मात···
नौवे दुर्गा मात मातु का ध्यान लगाये
नौ नाथ चौरासी सिद्ध तेरे द्वारे आये
नारद धरे ध्यान इन्द्र तेरी आरती लाये
पंडित आसन बैठ के चण्डी पाठ सुनाये
नौये सिद्धि धात्रियां जो नव दुर्गा कहलाई
जगन्नाथ शरनी पड़े तुम ही मात पिता, मात···

इसके अतिरिक्त देवी के निम्न नौ प्रकार अन्य रूप भी कहे गये है—

१. महाकाली
२. अन्नपूर्णा
३. चण्डी
४. हिंगलाज
५. विंध्यवासिनी
६. महालक्ष्मी
७. महासरस्वती
८. अम्बिका
९. अंजनी।

इन सबके महात्म्य का वर्णन निम्न भेंट में किया गया है—

नौ देवियों को भेंट

तेरी नौ नौ ज्योतां जागें आजा ऊंचे पर्वत वालिये
पहली जोत माता तेरी महाकाली कहलाये
मुक्ति भक्ति को देने वाली ज्वालामुखी सुहाये
तेरी ज्योत न बुझने पाये, आजा···

दूजी ज्योत मात तेरी अन्नपूर्णा कहाई
अपने भक्तों के तू जननी अन्न भण्डार भराई
वह तो खटरस भोजन पाये, आजा···

तीजी ज्योत महारानी की चण्डी जी कहलाये
अपने भक्तों के तू माता शत्रु नाश कराये
उनका बाल न होवे बांका, आजा···

चौथी ज्योति माता जी की हिंगलाज कहलाती
जो श्रद्धा से भक्ति करता सगरे दुःख मिटाती
सगरी व्याधा नाश कराये, आजा···

विन्ध्यवासिनी पंचम ज्योति कहता है जग सारा
अपने भक्तों का करती है शोकों से छुटकारा
उनके सारे कष्ट मिटाये, आजा···

कुण्ड के मांह ज्योति छटवां महालक्ष्मी माई
इसके पूजन करने से स्वर्णादिक घर भर जाई
उनके सकल भण्डारे भराये, आजा...
सप्तम ज्योति सरस्वती मां सारा जगत पुकारे
जहां आठवीं को जग सारा कहे अम्बिका काली
है जग में विख्यात मात सन्तान के देने वाली
मैया गोद न खाली राखे, आजा...
बसे कुण्ड में नौवीं ज्योति नाम अंजनी माता
इसका पूजन आयु और सुख की सिद्धि का दाता
भक्तों सभी ज्योति पर वारी, आजा...

लेकिन वर्तमान युग में जिन नौ देवियों को अत्यधिक प्रसिद्धि है और जिनके मन्दिर भारतवर्ष में विभिन्न स्थानों पर हैं, जहां लाखों यात्री वर्ष प्रति वर्ष जाकर अपनी भक्ति भावना का परिचय देते हैं उन नौ देवियों के नाम इस प्रकार हैं—

१. भगवती सती (पार्वती देवी)
२. श्री दुर्गा जी

३. श्री वैष्णों देवी
४. श्री ज्वाला जी
५. श्री नैंना देवी
६. श्री चण्डी देवी
७. माता चिंतपुरनी देवी
८. श्री बाला सुन्दरी देवी
९. कोट कांगड़े वाली देवी

शिव पुराण में कथा आती है कि जब सती के शव को लेकर शिव तीनों लोकों का भ्रमण कर रहे थे तो भगवान विष्णु ने सती के अंगों को काट २ कर गिरा दिया था। जिन-जिन स्थानों पर अंग गिरे वहां शक्ति पीठ माने गए। कुल ५१ शक्ति पीठों में इन नौ देवियों के मन्दिर की गणना आती है।

इसी कथा का रसास्वादन आगे लिखी भेंट में पढ़िए—



मां के विविध रूपों का नामकरण....

तैंने रूप अनेकों धारे ऊंचे २ पर्वत वालिये
लागें एक २ से न्यारे सुनले मेरी लाटां वालिये
आत्मदाह शिव सुना सती का भये क्रोध में आंधे
झुलसा हुआ शरीर सती का लटकाया निज कांधे
फिरते पर्वत-पर्वत मारे, ऊंचे...

हाहाकार मचा त्रिलोकी, लगे देव थर्राने
विष्णु ने सृष्टि रक्षा हित धनुष बाण संधाने
सती के काट अंग भू डारे, ऊंचे...

केश गिरे कलकत्ते जाकर बनी कालिका काली
नीलाचल आसाम गिरा कुछ भई कुमख्या वाली
तेरे होवें जय जय कारे, ऊंचे...

शीश गिरा पर्वत शिवलोका शाकुम्भरी बन आई
हाथ गिरा ढिंग जाय कराची हिंगराल कहलाई
सुर नर मुनिजन नाम उचारे...

मस्तक गिरा पास चंडीगढ़, मनसादेवी नाम पड़ा
नंगल पर्वत पर नैन गिरे, नैनादेवी नाम चलाया
टेढ़े मेढ़े तेरे द्वारे, ऊंचे…

चरण गिरे नियरे भरवाई चिंतपूरनी आई
ज्वाला जी पर्वत पर जिह्वा गिरी ज्वाला जी कहलाई
दीखे लपटों के नजारे, ऊंचे…

स्तन गिरे कांगड़ा जाकर वृजेश्वरी बन आई
त्रिकूट मणी पर्वत पे बाजू वैष्णों देवी कहाई
'भक्तों आन पड़ा तेरे द्वारे, ऊंचे…



भगवती सती (पार्वती) की कथा

एक समय महाव्रती राजा दक्ष ने देवी का तप किया। तीस हजार वर्षों तक निरन्तर तप करने के बाद राजा को जगदम्बिका ने दर्शन दिये, वे कृतार्थ हो गये। राजा दक्ष ने देवी से पूछा कि भगवान शंकर ने रूद्र नाम से ब्रह्मा के पुत्र के रूप में अवतार लिया है और

आपका अवतार अभी हुआ नहीं है तो शिवजी की पत्नी कौन होगी।

तब जगदम्बा ने उन्हें वर दे दिया कि मैं ही तुम्हारी स्त्री से पुत्री रूप में उत्पन्न होकर कठिन तप से शिव की पत्नी बनूंगी। शिवजी बिना कठिन तपस्या के प्राप्त नहीं हो सकते।

कुछ कालोपरान्त महामाया ने दक्ष प्रजापति के घर जन्म लिया और सती नाम से वह माता-पिता के घर में पलने लगी। जब सती बड़ी हुई तो शिवजी की प्राप्ति के लिए माता से तप करने की आज्ञा मांगी। जब से वह तपस्या को गई तब से उनका नाम उमा पड़ गया।

तप की समाप्ति पर भगवान शिव ने सती को दर्शन दिये और सती के आग्रह पर कैलाशवासी भगवान शंकर ने सती के पिता के घर जाकर विधिवत रूप से सती को स्वीकार किया।

एक समय देवसभा में दक्ष प्रजापति के आगमन पर जब भगवान शंकर उठकर खड़े नहीं हुए तो महाराज

दक्ष ने रुष्ट होकर कहा—सांसारिक सम्बन्ध में इसने मेरे पुत्र समान होते हुए भी मुझे प्रणाम नहीं किया अतः हे देवताओं ! मैं इसे बहिस्कृत करता हूँ। आज से यह देवताओं के साथ भाग नहीं पायेगा। इसी बात को लेकर राजा दक्ष शिवजी के विपरीत हो गये।

एक समय लीलाधारी शंकर सती के साथ नन्दीश्वर पर बैठे त्रिलोकी का भ्रमण कर रहे थे तो दण्डक वन में पहुँचने पर शंकर जी ने विरह से व्याकुल होकर घूमते रामचन्द्र जी को प्रणाम किया था। इस सम्बन्ध में यह कहा जाता है कि एक बार शिवजी अखंड समाधि में लीन थे। दीर्घकाल के बाद जब उन्होंने समाधि खोली उनके मुख से 'राम' शब्द निकला।

भगवती सती ने उसे सुनकर शिवजी से पूछा—'स्वामी ! राम कौन हैं ? जिनका आप स्मरण करते हैं।'

तब शिवजी ने उत्तर दिया—'हे प्रिय ! राम ही मेरे आराध्य देव हैं। वे साक्षात् परमब्रह्म हैं। वर्तमान में वह

वह मानव शरीर धारण कर उत्पन्न हुए हैं और भू
मण्डल पर लीला करते विचर रहे हैं। धर्म की स्थापन
के लिए ही मेरे प्रभु ने यह अवतार लिया है। अतः
उन्हीं का स्मरण कर रहा हूँ।

यह सुनकर सती के मन में सन्देह हुआ कि यदि
राम पूर्ण ब्रह्म हैं तो वह सीता के विरह में व्याकुल होक
एक सामान्य मनुष्य का सा व्यवहार क्यों कर रहे हैं
अन्तर्यामी भगवान शंकर ने जब यह जाना कि रामचन्
के पूर्ण ब्रह्म होने के बारे में सती के मन में शंका है
उन्होंने सती से कहा—हे प्रिय, यदि तुम्हारे मन
किसी प्रकार का सन्देह है तो तुम स्वयं अपनी बुद्धि
परीक्षा ले सकती हो।

पति से स्वीकृति पाकर सती उस स्थान पर
पहुँची जहां रामचन्द्र जी सीता के विरह में व्याकु
होकर भटक रहे थे। इस समय सती ने सीता जी का
धारण कर लिया था और सोचा कि यदि रामच
उन्हें देखकर भ्रमित हो जायेंगे तो स्पष्ट हो जायेगा
वे पूर्णब्रह्म नहीं हैं।

परन्तु सती ने जो सोचा था उसका उल्टा हुआ। सीता का रूप धरकर आती सती को देखकर भगवान राम ने उन्हें प्रणाम किया और कहा—हे माता आप वन में क्यों विचरण कर रही हैं, भगवान शंकर कहां हैं ?

रामचन्द्र जी के मुख से 'माता' शब्द सुनकर सती अत्यन्त लज्जित हुई और इस स्वरूप को त्यागकर शंकर जी के पास लौट आई। शिवजी भी योग दृष्टि से यह सब कुछ देख रहे थे। जब उन्होंने सती को मातृ तुल्य सीता के रूप में देखा तो त्याग दिया। सती के मन में घोर पश्चाताप और दुःख हुआ। लेकिन अब क्या हो सकता था। शिवजी ने सती से कुछ न कहा लेकिन धीरे-धीरे सती को भी पता चल गया कि भगवान ने उन्हें पत्नी रूप में त्याग दिया है, वे दुःखी रहने लगीं।

इसी समय दक्ष प्रजापति ने कनखल नामक स्थान पर एक बड़े भारी यज्ञ का आयोजन किया। यज्ञ में भाग लेने के लिए उन्होंने सभी देवी-देवताओं को तो

आमंत्रित किया लेकिन पूर्व द्वेष के कारण शिव और सती को नहीं बुलाया।

राजाओं और देवताओं को विमानों में बैठकर के यज्ञ में सम्मिलित होने के लिए जाते देखकर सती ने भी अपने पति से चलने का आग्रह किया। शिवजी ने बिना निमन्त्रण के जाना उचित न समझा। सती ने पुनः आग्रह किया कि पुत्री को पिता और गुरु के घर बिना बुलाये जाने में कोई दोष नहीं। अतः शिवजी ने सती को तो दक्ष के यहां जाने की आज्ञा दे दी, परन्तु स्वयं नहीं गये। सती अपने पिता के उत्सव में जाकर सम्मिलित तो हो गई मगर वहां उसका वैसा आदर नहीं हुआ जैसा कि अन्य निमन्त्रित अतिथियों का हो रहा था। भगवान शंकर जी की अर्धाङ्गिनी सती ने अपने पिता के यज्ञ में समस्त देवताओं के साथ पति को न बुलाये जाने पर उनका घोर अपमान समझा वे इस निरादर को सहन न कर सकी। मन ही मन वह अपने को पत्नी के रूप त्यागे जाने से भी दुःखी थीं। वह यज्ञ के समक्ष खड़े होकर क्रोध में आकर कहने लगी—हे पिता! मैंने तेरे

शरीर से जन्म लिया और तूने मेरे पति का अपमान किया है इस कारण मैं तेरे से उत्पन्न इस शरीर को न रक्खूंगी। अतः यज्ञ में अपने पति का भाग भी न देख कर तुरन्त ही देह त्याग देने का संकल्प कर, उसी यज्ञ कुण्ड में गिरकर अपने प्राणों की आहुति दे दी सती हवन कुण्ड में कूद पड़ी।

यज्ञ में हा हा कार मच गया !

सूचना महादेव जी को मिली !!

परिस्थिति को देखकर महादेव जी को रौद्र रूप धारण करना पड़ा। उन्होंने तुरन्त ही अपने गणों को आज्ञा दी कि यज्ञ को तहस-नहस कर दो। दक्ष का सिर काटकर उसी हवन-कुण्ड में फेंक दो जहां सती का शरीर गिरा है। गणों ने यज्ञ नष्ट-भ्रष्ट कर दिया। दक्ष का सिर भी हवन की भेंट कर दिया गया। यह देखकर समस्त देवताओं ने महादेव जी से क्षमा मांगी और उनकी स्तुति की। फलस्वरूप महादेव जी को प्रसन्न कर लिया गया सबके विचारानुसार यज्ञ तो पूर्ण होना ही चाहिए था। दक्ष के धड़ के साथ बकरे का सिर जोड़कर उन्हें जीवित

किया गया। तत्पश्चात् दक्ष ने बकरे की भाषा में बम् बम् शब्द का उच्चारण करके महादेव जी की स्तुति की। शिवजी प्रसन्न हुए और वर दिया कि तेरी पूजा भी मेरे समान ही होगी।

इस घटना के फलस्वरूप हरिद्वार से ४ किलोमीटर पर कनखल नामक स्थान में दक्षेश्वर महादेव का मन्दिर बना है। यूं तो साल भर ही श्रद्धालु दर्शनों को जाते हैं परन्तु सावन में विशेष पूजा होती है। सावन के प्रत्येक सोमवार को यहां मेला लगता है मन्दिर काफी बड़ा बन गया है। दर्शन करने वालों की सभी मनोकामना पूर्ण होती हैं।

इसके बाद शिवजी सती के विरह में व्याकुल होकर उसके मृत शरीर को कन्धे पर डाले हुए तीनों लोकों में घूमने लगे। इस स्थिति को देखकर भगवान विष्णु ने चक्र से सती के मृत शरीर के टुकड़े-टुकड़े करके गिरा दिये। सती की देह के अंग ५१ स्थानों पर गिरे। इन सभी स्थानों को शक्ति पीठ कहा जाता है।

पति के अपमान से दुःखी हो अपना शरीर त्याग करने के बाद फिर से उन्हीं महादेवजी से विवाह करने के अभिप्राय से उन्होंने हिमालय के घर जन्म लिया। अब सती की माता का नाम मेनका था। मेनका सद्गुणी और अत्यधिक रूपवान थी। माता के समान ही शरीर का वर्ण उज्जवल होने से उन्हें 'गौरी' तथा पर्वतराज की कन्या होने के कारण पार्वती कहते थे। आज भी वह जगत जननी आदि शक्ति और सर्व व्यापिनी के रूप में भारत में पूजी जाती हैं।

—:०:—

सती जी की भेंट

जय जगशाली प्रगटी ज्वाला दर्शन कारण जन आये,
कर कृपा पृथ्वी पर प्रकटी देव सभी मंगल गाये।
रची यज्ञ प्रजापति राजे, तैंतीस कोटि देवता मिल साजे॥
गिरि पर गौरा सुन पाये।
हाथ जोड़ ठाढ़ी शिव आगे, सुनो देव देवनराये,

दक्ष प्रजापति पिता हमारे, मैं दासी वह दास तुम्हारे।
रचो यज्ञ हम सुन पाये॥
करो कृपा प्रजापति पर स्वामी, देऊ आज्ञा दासी जाये,
ऐसे वचन सुने शिव बोले, कर विचार शंकर मुख बोले।
कौन दूत द्वारे आये॥
कौन सन्देश तान लिख भेज्यो, कौन खबर गौरा पाये,
ऐसे वचन कहे ईश्वर तब, गौरा मन भयो कश्वर।
मुख मुर्छा तन शशि पाये॥
निरख रही गौरा शिव शंकर, अधर मधुर शिव मुस्काये,
ले आज्ञा जब चली भवानी, दूत साथ कीने अगवानी।
यज्ञशाला पहुँची जाय॥
तात मात लोगन पुरवासी गौरा आदर ना पाये,
ऐसा कोप किया जब चण्डी अंग-अंग बढ़वा परचण्डी।
अंग भेष सब धधिकाये॥
चले दूत आये शिव द्वारे खबर गौरा की ले आये,
दूत कहे सुनिये अविनासी, तात-मात लोगन पुरवासी।
गौरा आदर न पाये॥
भाग तुम्हारा उन नहि राखा गौरा जी देहि धधिकाये,

कठिन वचन जब दूत सुनाये, बड़े क्रोध में शंकर आये।
अंग वेश सब कंधिकाये॥

जटा खोल एक पुरुष निकाला नाम वीरभद्र पाये,
कहैं महादेव सुनो वीरभद्र यज्ञशाला जा करो उपद्रव।
यही वचन हमसे पाये॥

जा राजा का शीश उतारो यज्ञ भंग कर देऊ जाये,
ले आज्ञा जब वीर सिधारे अति घन गरजत रहे अंधियारे।
बड़े वेग जा द्वन्द मचाये॥

सकल सामग्री आन बिगाड़ी यज्ञ भंग कर दिया जाये,
कई मारे कई पकड़ पछाड़े कई के शीश पकड़ दे मारे।
कई भागे कई शरनी आये॥

जा राजा का शीश उतारा यज्ञ भंग कर दिया जाये,
कोलाहल अति भयो यज्ञशाला चौदह भवन रहे जुड़ियाला।
भयभीत सब कम्पाये॥

रवि भानु जैसे नहीं सूझे भयो अन्धकार नहीं दृष्टाये,
सब देवन मिल करी विचारी दारुण दुख बनो अति भारी।
कहो कौन उपाय यह दुख जाये।

होय एकत्र चलो शिव आगे है भोला वह मन जाये,

देव सभी कैलाश में आये हाथ जोड़कर अर्ज सुनाये।
सुनो देव देवन राये॥
मन्त्र पाठ गीतादिक स्तुति गंधरवा मंगल गाये,
शीघ्र प्रसन्न भये अविनासी सब देवन की पूजा राखी।
कहो कौन कारण आये॥
चल राजा के काज संवारो देव लो सब सुख पाये,
देव परिवार चले अविनाशी एक प्रतिज्ञा मन में राखी।
आगे आज चुगे चारा॥
त्रिशूल प्रहार कर शीश उतारा राजकमल पर जा धारे,
सावधान भये जब राजा पूरन सफल भये सब काजा।
देव लोक सब सुख पाये॥
बम्-बम् शब्द कहे राजा ने शिव शंकर के मन भाये,
जय शिव त्रयम्बक जटाम्बर नन्दीगण असवार दिगम्बर।
गंगा शीश शोभा पाये॥
असुरन संहारन देव रक्षकपालक काल हरन महाकाल आये,
आप ही कर्ता आप ही धर्ता काल बली है तुमसे डरता।
आप विधाता तुम माये॥
रलमिल साधा अचरज कीता कौतुक लखिया न जाये,

गरीबदास गावे जस तेरा गुन नहीं एक औगुन बहुतेरा।
जन तेरा यश नित गाये॥
जन-जन से करो निबेड़ा जनम-मरण सब छुट जाये।

दुर्गा जी की कथा

दैत्यराज धनु के रम्भ और करम्भ नाम के दो पुत्र हुए। बड़े हो जाने पर इन दोनों पुत्रों के कोई सन्तान न होने पर धनु की आज्ञा से दोनों ने पांच नदियों के संगम पर तपस्या करनी आरम्भ कर दी कर्म ने संगम के जल में बैठकर तपस्या की और रम्भ ने संगम के तट पर बैठकर।

इन दोनों की घोर-तपस्या से इन्द्र का सिंहासन हिला तो उसे बड़ी चिन्ता हो गई। एक दिन इन्द्र ने ग्राह का रूप धरकर जल में से ही कर्म का पांव खींच कर उसे डुबा दिया। इस प्रकार उसकी मृत्यु हो गई। कर्म की इस प्रकार अचानक मृत्यु देखकर रम्भ को बड़ा दुःख हुआ। उसने आत्म दाह करने का निश्चय कर लिया। जब वह चिता जलाकर उसमें कूदने लगा।

तब अग्निदेव ने प्रकट होकर उसे पकड़ लिया और कहा—'रम्भ तू तपस्वी है और आत्महत्या से बड़ा कोई पाप नहीं है। तुम इस अघन्य अपराध के विचार को त्याग दो और जो भी तुम्हारी इच्छा हो मुझसे वर मांग लो।

यह सुनकर रम्भ ने कहा—'यदि आप वर देना चाहते हैं तो मुझे एक ऐसा पराक्रमी पुत्र दीजिए जो देवराज इन्द्र सहित तीनों लोकों को जीत सके।'

अग्निदेव ने कह दिया कि तुम्हारी कामना अवश्य पूरी होगी। अब तुम जिसके साथ रति करोगे उसी से शूरवीर बालक पैदा होगा और तुम्हारी इच्छा पूरी होगी। यह वर पाकर रम्भ प्रसन्न होकर घर लौट रहा था तो मार्ग में ही, वह एक भैंस पर आसक्त हो गया। फल-स्वरूप उस भैंस ने एक परम पराक्रमी प्राणी को जन्म दिया। जिसका शरीर तो राक्षस का था परन्तु उसका मुंह भैंसे के समान था। अतः इसका नाम महिषासुर प्रसिद्ध हुआ।

समय आने पर रम्भ की भी मृत्यु हो गई और महिषासुर सुमेर पर्वत पर तपस्या करने चला गया। घोर तप के बाद ब्रह्मा जी ने उसे दर्शन देकर वर मांगने को कहा। महिषासुर ने वर मांगा कि उसकी मृत्यु कुंवारी कन्या के अतिरिक्त किसी के हाथ से न हो और जिस रूप को चाहे वही रूप धारण कर सके। वर देकर ब्रह्मा जी अन्तर्ध्यान हो गए। तब दैत्यराज महिषासुर अपनी राजधानी लौटकर आया।

मौका देखकर महिषासुर ने अपनी भारी सेना सहित इन्द्रपुरी पर आक्रमण कर दिया। देवता और दैत्यों का कई वर्षों तक युद्ध होता रहा। ब्रह्मा जी के वरदान के कारण देवताओं के किसी भी शस्त्र से महिषासुर मारा न जा सका। लड़ाई में देवताओं की हार हुई और समस्त देवता अपने-अपने लोक छोड़कर जान बचाने के लिए इधर-उधर भाग गये। इन्द्रपुरी और देवलोक पर अधिकार करने के बाद महिषासुर ने अन्य लोगों पर भी अत्याचार शुरू कर दिये।

देवता मिलकर ब्रह्माजी के पास गए और महिषासुर के अन्याय की सब कथा सुनाई।

देवताओं की पुकार सुनकर ब्रह्मा जी ने उन्हें महिषासुर की मृत्यु केवल कुंवारी कन्या के हाथों वाली वरदान की बात बताई तो देवताओं में नीरवता छा गई। महिषासुर के विनाश के लिए किसी अन्य उपाय की खोज में देवता ब्रह्मा जी को साथ लेकर भगवान शंकर और विष्णु के पास लौट गए। देवताओं की दुःखी आत्माओं ने अत्याचार का वर्णन उन्हें भी सुनाया। देवताओं की दुख भरी बातें सुनकर भगवान विष्णु और शंकर जी के मस्तक से बिजली कड़कने लगी। क्रोध के कारण मुख से एक महान् शक्तिशाली तेज पुंज प्रकट हुआ। ब्रह्मा जी के मुख से भी एक तेज निकला और इसी प्रकार सभी देवताओं के मुख से निकले हुए तेज पुंज से सम्मिलित होता गया। जब सभी तेज एकत्र हो गए तो उसने एक अति सुन्दर नारी का रूप धारण कर लिया। देवताओं के निकले हुए तेज से ही शक्ति के विभिन्न अंग बने।

भगवान् शंकर के तेज से उस देवी का मुख प्रकट हुआ, यमराज के तेज से मस्तक के केश, विष्णु के तेज



से भुजायें, चन्द्रमा के तेज से स्तन, इन्द्र के तेज से

कमर, वरुण के तेज से जंघा, पृथ्वी के तेज से नितम्ब ब्रह्मा के तेज से चरण, सूर्य के तेज से दोनों हाथ की अंगुलियां, प्रजापति के तेज से सारे दांत, अग्नि के तेज से दोनों नेत्र, संध्या के तेज से भौंहें वायु के तेज से कान और अन्य देवताओं के तेज से देवी के भिन्न २ अंग बने।

इसके पश्चात् भगवान् शिव ने उस देवी को अपना त्रिशूल दिया, बिष्णु ने चक्र, वरुण ने दिव्य शंख और पाश, अग्नि ने शक्ति व बाण से भरे तरकश, इन्द्र ने वज्र, यमराज ने दण्ड, प्रजापति ने स्फटिक मणियों की माला, ब्रह्मा जी ने कमण्डलु, काल ने ढाल तलवार, इसी प्रकार भगवान राम ने धनुष, हनुमान ने गदा आदि अस्त्र-शस्त्र उस देवी को भेंट किए। सूर्य ने उनकी रोम कूपों में अपनी किरणों को भर दिया। समुद्र ने बहुत उज्जवल हार, कभी न फटने वाले दिव्य वस्त्र, चूड़ामणि दो कुण्डल, हाथों के कंगन, दोनों भुजाओं के लिए मयूर, पैरों के नूपुर, गले के लिए सुन्दर हंसली व सब उंगलियों में पहनने के लिए अंगूठियां भेंट की। विश्व कर्मा

ने निर्मल फरसा, लक्ष्मी जी ने कभी न मुरझाने वाले कमल के फूल और हिमालय पर्वत ने सवारी के लिए सिंह प्रदान किया।

इस प्रकार सब देवताओं ने देवी को अनेक प्रकार के आयुधों से सुसज्जित करके सम्मानित किया। महिषासुर वध के लिए देवी से प्रार्थना की।

महाशक्ति ने जब क्रोध में आकर गर्जना की तो भूमण्डल कांपने लगा। आकाश पर बिजली कड़कती प्रतीत होने लगी यह देखकर सभी देवताओं ने संगठित स्वर से शक्ति की जय बोली। इस समय महिषासुर अपनी भक्ति में लीन था उसने देखा कि पृथ्वी से आकाश तक उथल पुथल मची है। क्रोध में आकर उसने शक्ति का नाश करने की ठान ली और वह महाबली अपने दैत्यों को लेकर शक्ति को मारने के लिए दौड़ा। महिषासुर की देवी की ओर देखते ही आंखें चुंधिया गई, दुर्गा अपने विराट रूप में क्रोधित होकर खड़ी थीं।

सर्व प्रथम महिषासुर का सेना नायक देवी से लड़ने आया। लाखों राक्षस अनेक अस्त्र-शस्त्रों से अकेली देवी पर लगातार प्रहार करते रहे और जगदम्बा मातेश्वरी दुष्ट आत्माओं का खात्मा करती रही। मां दुर्गे ने कई बड़े-बड़े राक्षसों को अपनी गदा और त्रिशूल से मौत की नींद सुला दिया। अनगिनत राक्षस मारे गये और हजारों अपनी बांहें खो बैठे। कईयों का सिर धड़ से अलग हो गया। जो मूर्ख थे वह मैदान छोड़कर भाग गये। कई दैत्य मौत के डर से देवी के पांवों पर गिरकर क्षमा मांगते रहे।

दैत्यों के इस घोर विनाश को देखकर महिषासुर का सेनापति चिक्षुर क्रोधित स्वर में चिल्लाया—ऐ कन्या, तूने मेरी सेना को तो मौत के घाट उतार दिया लेकिन तुझे मेरी शक्ति का अनुमान नहीं अब तू मेरे लोहे जैसे हाथों से बचकर नहीं जा सकती। मैं तेरा सर्वनाश कर दूंगा और फिर पल भर में ही सेनापति अपने बचे हुए साथियों के साथ तीरों की ऐसी बौछार करने लगा कि जैसे आंधी चलने से रेत उड़ती है। रणभूमि की

दशा और राक्षसों के इतने तेज प्रहार को देखकर देवी ने भी कोप से तीर कमान को निकाला और एक तीर से ही इतने तीर निकलने लगे कि जैसे भयानक रात में लाखों जुगनू भटक रहे हों। इन तीरों से राक्षसों के सीने छलनी कर दिए लड़ते लड़ते सेनापति चिक्षुर के सारे हथियार समाप्त हो गये तो वह ढाल और तलवार लेकर ही माते-श्वरी की तरफ दौड़ा। उसने तलवार से देवी पर प्रहार किया लेकिन जब तलवार देवी के शरीर से टकराई तो टुकड़े २ होकर पृथ्वी पर गिर पड़ी। फिर चिक्षुर ने त्रिशूल से देवी दुर्गा पर वार किया। चमकते हुए त्रिशूल को अपनी ओर आता देखकर जगदम्बा ने भी उस पर त्रिशूल फेंका। देवी का त्रिशूल चिक्षुर के त्रिशूल से टकरा कर उसे भी चिक्षुर की ओर ले चला और फिर त्रिशूल ने सेनापति का सीना चीर डाला।

अपनी सेना का खून पानी की तरह बहता देखकर महिषासुर ने एक विकराल भैंसे का रूप धारण करके देवी को मारने की एक असफल कोशिश की। यह देखकर जगदम्बा को बड़ा क्रोध आया और उसने किसी प्रकार

दैत्यराज महिषासुर को बांध लिया। लेकिन उसी समय महिषासुर ने भैंसे का रूप त्याग कर सिंह रूप धारण कर लिया। जब शक्ति ने उसे भी अपने बाणों से वश में कर लिया तब उसने अपने आपको एक बड़े गजराज के रूप लिया में बदल और अपनी सूंड से देवी को अपनी ओर खींचने लगा। देवी ने भी तीव्र प्रहार किया और गजराज का सूंड काट डाला। तब पुनः महिषासुर महा दैत्य ने अपने को फिर भैंसे के शरीर में परिवर्तित कर लिया।

इसी समय माता ने भी अपनी शक्तियों सहित महिषासुर के चलाये शस्त्रों को चकनाचूर करने लगी। तीव्र क्रोध में आकर शक्ति ने जब एक गर्जना करके कहा—'तूने अभिमान में आकर देवताओं से उनका अधिकार छीन-कर उनकी पवित्र आत्माओं को बड़ा कष्ट दिया है। अरे मूर्ख! मैं तेरा सर्वनाश करके ही चैन लूंगी।' इतना कहते ही देवी ने उछल कर महिषासुर को पकड़ लिया।

अपने पांव तले दबाकर उसके कण्ठ पर त्रिशूल का

प्रहार किया तो महिषासुर अपने असली रूप में भैंसे के शरीर से बाहर आने लगा। अभी वह आधा ही बाहर निकल पाया था कि देवी ने अपनी शक्ति से उसे वहीं रोक दिया और तलवार से तुरन्त ही उसका सिर काट डाला।

अपने महाराजा दैत्य महिषासुर की इतनी बुरी दशा देखकर शेष सभी मैदान छोड़कर भाग गये। महिषासुर को मरा देखकर सब देवी देवताओं में खुशी की लहर दौड़ गई और सब मिलकर मातेश्वरी दुर्गा जी की आरती उतारने लगे।

विजय प्राप्ति के बाद समस्त देवताओं ने देवी के आगे अपने आपको नतमस्तक होकर के बारम्बार यह विनय की, आपने एक महान् बलशाली राक्षस को मार हमें अभय किया, हमारे छीने हुए अधिकार हमें पुनः प्राप्त हुए। हमारी सब इच्छाएं पूर्ण हो गई हैं। अब हम आपसे यही विनय करेंगे कि जब भी हम आपका स्मरण करें, आप दर्शन दिया करें और हमारे

संकटों का निवारण किया करें। आप हमारे शत्रुओं का नाश करके सबको प्रसन्न किया करें।

दुर्गा सप्तशती की कथानुसार महिषसुर का अन्त करने के बाद भी जब अन्य राक्षसों जैसे चण्ड-मुण्ड, रक्तबीज, शुम्भ निशुम्भ आदि से देवता सताये गये तब मां दुर्गा ने अवतार अवतरित होकर राक्षसों का वध करके देवताओं को भय मुक्त किया।

मां दुर्गा आज भी जन-जन में शक्ति रूप में विद्यमान है जो भी उन्हें सच्चे मन से पुकारता है वह अंग-संग सहायता करती हैं।



रामचन्द्र जी पर देवी की कृपा की कथा

जिस समय रामचन्द्र जी अपनी सेना को साथ लेकर लंका पर चढ़ाई करने के लिए चले और समुद्र तट पर सेतु बांधते समय भगवान शंकर की आराधना की। उस समय भगवान शंकर ने प्रकट होकर उन्हें विजय का आशीर्वाद देते हुए कहा कि तुम भगवती दुर्गा की उपासना करो। उनकी कृपा से तुम्हें अवश्य ही विजय प्राप्त होगी।

शिवजी के आदेशानुसार रामचन्द्र जी ने वहीं पर भगवती दुर्गा की आराधना की उन्होंने देवी पर चढ़ाने के लिए १०८ कमल पुष्प रखे।

उस समय भगवती ने उनकी भक्ति की परीक्षा लेने के लिए उन कमल के पुष्पों में से एक कमल के पुष्प को गायब कर दिया।

पुष्प चढ़ाते समय जब रामचन्द्र जी ने देखा कि एक पुष्प की कमी है, उन्होंने कमल पुष्प के स्थान



पर अपने कमल के समान एक नेत्र को ही निकाल कर

माँ भगवती की सेवा में समर्पित करने का पूरा निश्चय कर लिया।

इस निश्चय के अनुसार उन्होंने जैसे ही बाण की नोंक से अपने एक नेत्र को निकालना चाहा, वैसे ही भगवती ने साक्षात् प्रकट होकर उनके हाथ से धनुष बाण को छीन लिया तथा आशीर्वाद देते हुये यह कहा—'हे रामचन्द्र ! मैंने स्वयं ही तुम्हारी भक्ति की परीक्षा लेने के लिए कमल का एक पुष्प दृष्टि से ओझल कर दिया था अब मैं तुम्हारी भावना को देखकर परम प्रसन्न हूँ। मैं तुम्हें वर देती हूँ कि रावण पर अवश्य ही विजय प्राप्त करोगे।

यह सुनकर रामचन्द्र जी ने कहा—'हे माता ! आप मुझे कोई ऐसा उपाय बताइये, जिससे मुझे रावण पर सरलता पूर्वक विजय प्राप्त हो सके।' तब भगवती ने उत्तर दिया—हे रामचन्द्र ! तुम इस स्थान पर एक यज्ञ करो और उस यज्ञ को कराने के लिए रावण को ही आमन्त्रित करो।

यदि रावण उस यज्ञ में सम्मिलित नहीं होगा, तब

तो वह अपने ब्राह्मण कर्म से भ्रष्ट होने के कारण स्वयं ही नष्ट हो जायेगा और यदि सम्मिलित हुआ तो यज्ञ की समाप्ति पर वह तुम्हें आशीर्वाद भी अवश्य देगा। इस प्रकार उसका आशीर्वाद उसी के लिए घातक सिद्ध होगा। इतना कहकर भगवती अन्तर्ध्यान हो गयीं।

तब रामचन्द्र जी ने उसी स्थान पर यज्ञ की रचना कर अपने एक दूत के द्वारा रावण के पास यह सन्देश भेजा कि तुम मेरा यज्ञ कराने के लिए आओ। महा पण्डित रावण ने निमन्त्रण को स्वीकार किया और यज्ञ कराने के लिए आया।

यज्ञ की समाप्ति पर रावण ने स्वयं ही रामचन्द्र को आशीर्वाद भी दिया कि तुमने जिस उद्देश्य से यह यज्ञ किया है, उसमें सफलता प्राप्त करोगे।

इस आशीर्वाद के फलस्वरूप रामचन्द्र जी को रावण पर विजय पाना सरल हो गया और युद्ध क्षेत्र में श्री रामचन्द्र जी के हाथों रावण की मृत्यु हुई।

—:०:—

दुर्गा जी की भेंट

आदिशक्ति सांची महारनी, अनादी रूप की झलक सुहानी
सप्त ज्योति निर्भय सुखदाई, आओ माई जी !
ब्रह्मा विष्णु महेश शेष सब रलमिल कर गावें,
सहस्र फनों से शेष नाग तुझे वेद सुना जावे।
मेरे संकट हरो जी भवानी दाहिनी ॥ जय०

सिंह पीठ पर आदिकुमारी, छवि सोहनी मनमोहनी न्यारी
दैत्यन रुधिर मांस हारी, आओ माई जी।
कर खप्पर त्रिशूल खड्ग और धनुष बाण सोहै
शंख चक्र गदा पद्म लिये माई तीन लोक मोहे
तेरा लौंकड़िया अगवानी दाहिनी ॥ जय०

प्रथमें मधु कैटभ मारे, महिषासुर को पकड़ पछाड़े,
धूम्रलोचन को भस्म कर डारे, आओ माई जी।
चण्ड मुण्ड को मार के मुण्ड माला तनत्राई,

रक्तबीज का किया नाश, फिर शुम्भ निशुम्भ धाई।
तुम तो खेलोगी खेल खिलानी दाहिनी ॥ जय०

जहां जहां भीड़ पड़ी भक्तों पर
तहां तहां रक्षा करती हो आकर
घट २ व्यापक आप रूप धारी, आओ माई जी
रूप रूपकर रूप रूपकर रूप रूप छाया
तेरा जन ध्यानू जस गाया, मेरी सुन लीजे महामाया
तेरे चरण कमल पर वारी दाहिनी ॥ जय०

—:०:—

वैष्णों देवी को कथा

त्रेतायुग में जब पृथ्वी पर रावण, खरदूषण, त्रिशिरा ताड़का आदि राक्षसों ने अपने अत्याचारों से धर्मात्मा, साधु सज्जनों का भी जीना दुर्लभ कर दिया था तथा सर्वत्र आसुरी प्रवृतियों का बोलबाला था उस समय भगवती महाकाली, महालक्ष्मी तथा महासरस्वती, सावित्री एवं

गायत्री आदि महाशक्तियों ने एक स्थान पर एकत्र होकर पृथ्वी पर धर्म की रक्षा के लिए अपने सम्मिलित तेज से एक दिव्य शक्ति को जन्म देने का निश्चय किया। फलस्वरूप उसी समय इन सभी देवियों के शरीर से तेज की एक-एक किरण ने निकल कर एक स्थान पर संयुक्त हो, एक सुन्दर दिव्य बालिका का स्वरूप धारण कर लिया।

उस दिव्य बालिका ने प्रकट होकर महाशक्तियों से पूछा—'आपने मुझे किसलिए उत्पन्न किया है। मेरा क्या नाम है और मुझे क्या करना है?'

यह सुनकर महादेवियों ने उस दिव्य बालिका से कहा—हे कन्ये! तुम्हारा नाम 'वैष्णवी' है। पृथ्वी पर धर्म की रक्षा के उद्देश्य से हमने तुम्हें प्रकट किया है। अब तुम दक्षिण भारत में 'रत्नाकर सागर' के घर में पुत्री बनकर प्रकट होओ। वहां तुम भगवान् विष्णु के अवतार भगवान् रामचन्द्र की पत्नी सीता का रावण द्वारा हरण करने पर उनकी रक्षा करना।

तत्पश्चात् तुम वैष्णव धर्म का प्रचार करना और अपनी आत्म-प्रेरणा के अनुसार सब कार्यों को करना।

इस घटना के कुछ समय पश्चात् उस कन्या ने रत्नाकर सागर के घर में जन्म लिया। वहां उसका नाम 'वैष्णवी' रखा गया।

वैष्णवी ने अल्पायु में ही अपने रूप गुण तथा अलौकिक शक्तियों से सब लोगों को चमत्कृत करना आरम्भ कर दिया। कुछ ही दिनों में उस दिव्य कन्या की प्रसिद्धि दूर-दूर तक फैल गई तथा सहस्रों व्यक्ति रत्नाकर सागर के यहां उस कन्या के दर्शनों के लिए आने-जाने लगे।

कुछ समय बाद वह दिव्य कन्या अपने पिता से आज्ञा प्राप्त कर, समुद्र तट के एक निर्जन प्रान्त में कुटी बनाकर रहने लगी। वहां हर समय श्री रामचन्द्र जी का ध्यान स्मरण करना ही उसका मुख्य कार्य था। उसकी तपस्या को देखकर सूर्य नारायण ने उसे एक दिव्य कमण्डल भेंट किया।

जब भगवान विष्णु ने रामचन्द्र के रूप में अयोध्या में अवतार लिया और वे अपने पिता दशरथ की आज्ञा

से वनवासी हुए, उस समय वह कन्या वैष्णवी समुद्र तट पर अपनी कुटिया में समाधि लगाये हुए श्री रामचन्द्र जी के आगमन की प्रतीक्षा कर रही थी।

रावण के द्वारा सीता का हरण कर लिया जाने पर रामचन्द्र जी वानर भालुओं की सेना को साथ लिए हुए जब लंका जाने के लिए समुद्र तट पर पहुँचे, तो वहां उन्होंने उस समाधिमान कन्या को भी देखा।

श्री रामचन्द्र जी उसकी कुटिया में गए। रामचन्द्र जी के पहुँचने से वैष्णवी की समाधि भंग हो गई। रामचन्द्र जी को अपने सामने देखकर उसे अत्यन्त प्रसन्नता हुई। विधिवत् स्वागत सत्कार करने के उपरान्त उसने रामचन्द्र जी की स्तुति प्रार्थना की।

जब रामचन्द्र जी ने उस कन्या से तपस्या करने का कारण तथा परिचय पूछा तो उसने उत्तर दिया—'हे प्रभु! मैं रत्नाकर सागर की पुत्री 'वैष्णवी' हूँ। मैंने आपको पति रूप में प्राप्त करने का संकल्प किया है। इसी के लिए मैं इतने दिनों से तपस्या कर रही थी। अब कृपा करके मुझे अपनी पत्नी के रूप में स्वीकार करें।

यह सुनकर रामचन्द्र जी ने कहा—'हे सुन्दरी ! अपने इस अवतार में मैंने एक पत्नीव्रत होने का संकल्प किया है, फिर भी तुम्हारी तपस्या का फल तुम्हें प्राप्त होगा, अतः मैं यह शर्त रखना चाहता हूँ कि रावण का वध करने के उपरान्त मैं किसी दिन तुम्हारी इसी कुटिया पर वेष बदल कर आऊंगा उस समय यदि तुम मुझे पहचान लोगी तो मैं तुम्हें पत्नी के रूप में ग्रहण कर लूंगा अन्यथा जो दैव इच्छा।'

इतना कहकर रामचन्द्र जी वहां से चले गए। वैष्णवी पूर्ववत् समाधिस्थ हो गई।

रावण का वध करने के पश्चात् जब रामचन्द्र जी अयोध्या लौट आये तब एक रात स्वप्न में उन्होंने उस समुद्र तट वासिनी कन्या को देखा। उस स्वप्न के कारण रामचन्द्र जी को अपने दिये हुए वचन की याद आई। फलतः एक दिन वे अपने भाई लक्ष्मण के साथ वृद्ध साधु का वेष बनाकर वैष्णवी की कुटिया में पहुंचे। उस रूप में वैष्णवी उन्हें पहचान न पाई। तब रामचन्द्र जी ने स्वयं ही अपना परिचय देते हुए कहा—'हे देवी ! दैव को यह स्वीकार नहीं है कि वह मेरे संकल्प को

पूर्ति न होने दें। इस अवतार में मैं एक पत्नी व्रती ही रहना चाहता था, इस कारण तुम मुझे इस बदले हुए वेष में नहीं पहचान सकीं। इसमें तुम्हारा कोई दोष नहीं है। विधि का विधान ही ऐसा था।

जब रामचन्द्र जी के मुख से इन शब्दों को सुनकर वैष्णवी अत्यन्त दुखी होने लगी तथा पश्चाताप प्रकट करने लगी, तब रामचन्द्र ने आश्वासन देते हुए यह कहा— हे कल्याणी! तुम मन में दुखी मत होओ। कलियुग में जब मेरा कल्कि अवतार होगा, तब मैं तुम्हें अपनी शक्ति के रूप में ग्रहण करूंगा। उस समय तक के लिए तुम उत्तर भारत में माणिक पर्वत के तीन शिखरों वाले त्रिकूट पर्वत की उस सुरम्य गुफा में जिसमें तीन महाशक्तियों का निवास है और शीतल जल सदैव प्रवाहित होता रहता है, जाकर तपस्या करो। वहां मेरे सेवक हनुमान, जामवन्त, नल, नील आदि तुम्हारे प्रहरी रहेंगे। उस स्थान पर सब लोग तुम्हारे दर्शनों को पहुँचा करेंगे तथा सम्पूर्ण भारत में तुम्हारी महिमा फैलेगी। तुम उस क्षेत्र में रहकर आसुरीवृति वाले दुष्ट राजा भैरों का संहार करके वैष्णव धर्म का प्रचार करना। सूर्य नारायण ने तुम्हें जो दिव्य

कमण्डल दिया है, उससे तुम्हें सब प्रकार के भोजन तथा कन्द, मूल फल आदि की प्राप्ति होती रहेगी।

यह कहकर श्री रामचन्द्र जी अयोध्या चले गए। तब वैष्णवी भी त्रिकूट पर्वत पर आकर निवास करने लगी।

वैष्णवी देवी ने उस क्षेत्र में देवी सम्पत्ति तथा वैष्णव धर्म का प्रचार करना आरम्भ कर दिया। कलियुग आने पर उस क्षेत्र में 'भैरों बलि' नामक एक दुष्ट राजा ने सतलुज से लेकर झेलम नदी तक अपना साम्राज्य स्थापित किया। यह आसुरी भावों से सम्पन्न तथा वैष्णव धर्म का विरोधी था। वैष्णव धर्म के अनुयाई पर वह भांति-भांति के अत्याचार किया करता था। उसके कारण उस क्षेत्र के निवासी भगवद् भक्तों में हाहाकार मच गया। वैष्णवी देवी ने जब यह देखा तो उन्होंने 'भैरों बली' के विरुद्ध समस्त वैष्णवों को एकत्र करके भगवद् भक्ति के प्रचार का आन्दोलन आरम्भ कर दिया। भगवती के चमत्कारों को देखकर सहस्रों व्यक्ति उनके अनुयायी बन गए। भगवती की प्रसिद्धि एवं चमत्कारों की चर्चा भैरों बलि के कानों में पहुँची। तब उसने भगवती की परीक्षा लेने का निश्चय किया।

एक बार भगवती ने क्षेत्र के निवासियों को एक डण्डारा दिया। उस भण्डारे में सहस्रों व्यक्ति सम्मिलित हुए। देवी ने अपने कमण्डल में से भांति २ के भोज्य पदार्थ निकाल २ कर सबको भोजन कराया। भैरों बलि भी उस भण्डारे में गुप्त रूप से सम्मिलित हुआ था। उसने जब देवी के चमत्कार एवं सौन्दर्य को देखा तो वह उस पर मोहित हो गया। उसने मन ही मन निश्चय किया कि मैं इस सुन्दरी को अपनी पत्नी बनाऊंगा।

वहां से लौटकर भैरों बलि ने अपने दूत के द्वारा भगवती के पास यह समाचार भेजा कि राजा भैरों बलि तुम्हारे साथ विवाह करना चाहते हैं, अतः तुम उनके प्रस्ताव को स्वीकार कर लो।

भगवती ने इस प्रस्ताव को ठुकराते हुए दूत को उत्तर दिया कि भैरों बलि अत्याचारी तथा अधर्मी है मैं उसका सर्वनाश करके रहूँगी।

दूत के मुख से भगवती के कहे हुए शब्दों को सुन कर भैरों बलि अत्यन्त क्रुद्ध हुआ। उसने अपनी सेना लेकर भगवती से युद्ध करने का निश्चय किया। उधर भगवती ने भी अपने सैनिकों की व्यूह रचना कर भैरों बलि को दण्ड देने की ठानी।

कुछ समय बाद भैरों बलि के सैनिकों ने भगवती के ऊपर आक्रमण किया। भगवती ने उसकी सेना को मार भगाया। उसके बाद वे स्वयं 'माई देवा' नामक स्थान से हटकर 'भूमिका (भूमि) नामक' स्थान पर चली गई।

भैरों बलि ने भूमिका में भी अपनी एक सैनिक टुकड़ी को भेजा तो देवी ने उसे भी पराजित कर दिया। उन्हीं दिनों देवी ने 'रियासी) तथा 'सलाल' नामक स्थानों को भैरों बलि के राज्य से मुक्त करवा लिया।

'भूमिका' के बाद देवी ने 'चरण पादुका' नामक स्थान पर अपना शिविर लगाया। वहां से चलकर 'आदिकुमारी' नामक स्थान पर कुछ दिनों रही। आदि-कुमारी में भगवती ने अपने सैनिकों का जल कष्ट दूर करने के लिए एक सूखे हुए तालाब को सुस्वादु जल से परिपूर्ण कर दिया जो अभी तक विद्यमान है।

भैरों बलि ने अपने सैनिकों के साथ इस स्थान पर तीन ओर से चढ़ाई की। इस स्थान पर जो भयंकर युद्ध हुआ उसमें भैरों के मुख्य दो सेनापति एवं असंख्य सैनिक हताहत हुए। इसके बाद भगवती ने गर्भ गुफा में अपना डेरा डालकर युद्ध का संचालन किया। फलतः इस क्षेत्र में भैरों बलि तथा भगवती के सैनिकों में पग २ पर युद्ध होने लगा।

आदिकुमारी के बाद सांझी छत तथा भैरों टाप पर भैरों बलि को इतनी बड़ी पराजय मिली कि कुछ दिनों के लिए उसे युद्ध बन्द कर देना पड़ा। इसी बीच भगवती ने किश्तवाड़, रामनगर तथा भद्रवाह आदि अनेक स्थानों को भैरों बलि के साम्राज्य से मुक्त कराकर वहां अपना शासन स्थापित कर दिया तथा कर्थला, पिंगला, राजेश्वरी आदि देवियों को इन स्थानों का शासन करने के लिए नियुक्त किया।

भैरों बलि के साम्राज्य में केवल सतलुज का क्षेत्र शेष बच गया। कुछ दिनों युद्ध बन्द रखकर उसने नये सिरे से अपनी सेना का संगठन किया। इस बीच भगवती उस गुफा में जाकर निवास करने लगी थीं, जिसे आजकल वैष्णों देवी दरबार की पवित्र गुफा कहा जाता है और जिसमें रहकर तपस्या करने के लिए रामचन्द्र जी ने भगवती को आदेश दिया था।

कुछ समय बाद भैरों बलि ने अपनी सेना इकट्ठी करके उस गुफा पर आक्रमण कर दिया। जिस समय उसने गुफा के भीतर प्रवेश करना चाहा, उसी समय भगवती ने अपने चक्र द्वारा उसका सिर काट डाला। चक्र से कटा हुआ भैरों बलि का मस्तक उस स्थान से

लगभग दो मील की दूरी पर जा गिरा तथा धड़ वहीं गुफा के दरवाजे पर पड़ा रहा।

इसके बाद देवी भैरों के कटे हुए मस्तक के पास जा पहुँची और बोली—अरे दुष्ट! इतने दिनों तक मैं तुझे खेल खिलाती रही थी। परन्तु तू अपनी दुष्टता से बाज नहीं आया। अब इस स्थिति को प्राप्त होने के बाद तेरी क्या इच्छा रह गई उसे भी कह दे।

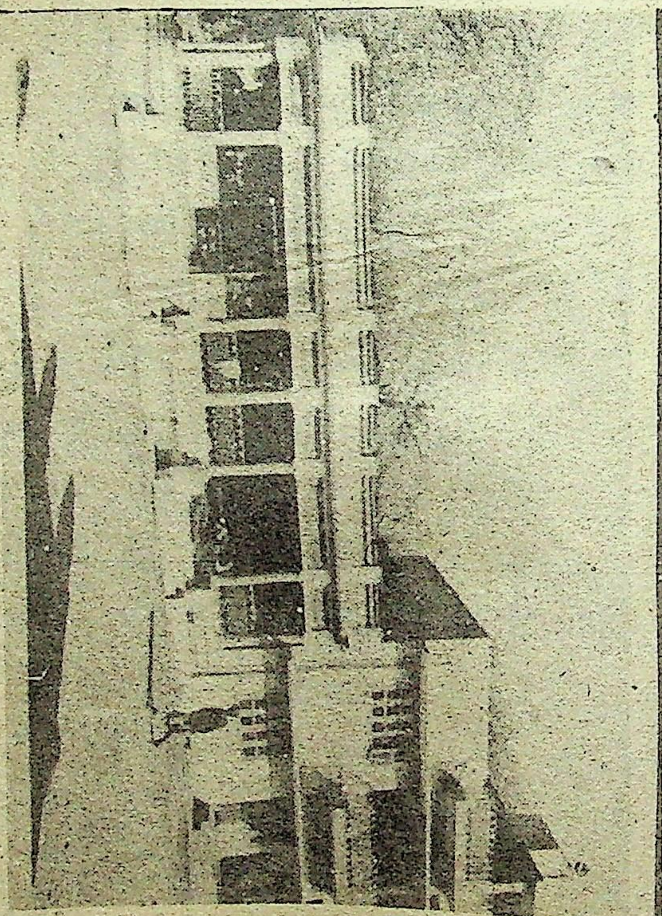
भगवती द्वारा इस प्रकार कहे जाने पर भैरों बलि के मस्तक ने अत्यन्त पश्चाताप प्रकट करते हुए कहा हे देवी मैं मूढ़ माया के वशीभूत होकर आपकी महिमा को नहीं जान पाया, जिसका फल मुझे प्राप्त हो चुका है। अब मेरी यही प्रार्थना है कि आप कृपा करके मेरे अपराधों को क्षमा कर दें। हे माता! पुत्र कुपुत्र हो सकता है परन्तु माता कभी कुमाता नहीं होती। आप मुझे अपनी शरणागत जानकर सद्गति प्रदान करें तथा ऐसा आशीर्वाद दें जिससे मुझ पापी को भी संसार में कोई यश प्राप्त हो। भैरों के इन विनीत वचनों को सुनकर भगवती वैष्णवी ने दयालु होकर कहा—हे भैरों! तुम्हारी आसुरी भावना अब

नष्ट हो चुकी है तथा तुमने शुद्ध आत्मा से प्रायश्चित प्रकट करके मुझसे प्रार्थना की है। मैं तुम्हें यह वर देती हूँ कि भविष्य में मेरी पूजा के लिए जो लोग इस स्थान पर मेरे दर्शनों के लिए आयेंगे, वे तुम्हारी भी पूजा करेंगे और वे मेरे दर्शनों के बाद तुम्हारे भी दर्शन करेंगे, इससे उनकी यात्रा सफल होगी। जो लोग तुम्हारे दर्शन नहीं करेंगे उनकी यात्रा सफल नहीं होगी।

इतना कहकर भगवती पुनः अपनी पवित्र गुफा में जा विराजी और भगवान राम के ध्यान में समाधिस्थ हो गई। भैरों का कटा हुआ मस्तक भी उसी स्थान पर पत्थर बन गया। भैरों का जो धड़ माता की गुफा के दरवाजे पर गिरा था, वह भी पत्थर का हो गया।

जिस स्थान पर भैरों का मस्तक गिरा था वहां पर इन दिनों भैरों का मन्दिर बना हुआ है। भगवती वैष्णवी की गुफा की यात्रा करने वाले लोग माता के दर्शन करने के बाद लौटते समय भैरों मन्दिर के भी दर्शन करते हैं। परन्तु माता के दर्शनों से पहले भैरों मन्दिर के दर्शन नहीं किये जाते।

यहां पर जो यात्री देवी के दर्शन को आते हैं और जो यात्री एक दिन में पूरी यात्रा नहीं कर पाते वे यहां



चिन्तामणी ट्रस्ट वैष्णों देवी

पर धर्माथ ट्रस्टों में रुककर अगले दिन पूरी यात्रा करते हैं। यहां कम्बल ओढ़ने बिछाने को मिलते हैं।

भगवती वैष्णवी अपनी पवित्र गुफा में समाधिस्थ होकर भगवान राम का ध्यान कर रही हैं और कल्कि अवतार होने की प्रतीक्षा में हैं। पवित्र गुफा में जो तीन पिण्डियां हैं, वे भगवती महाकाली, महालक्ष्मी तथा महासरस्वती की प्रतीक हैं। भगवती वैष्णवी सीता के अंश से उत्पन्न हुई हैं अतः वे भगवती महालक्ष्मी की ही प्रतिरूप हैं। गुफा स्थित पिण्डियों में बीच वाली पिण्डी भगवती महालक्ष्मी की है। उसी को 'भगवती वैष्णवी' कहा जाता है और भक्तजनों को वैष्णों माता के नाम से उसी पिण्डी के दर्शन कराये जाते हैं।

वैष्णों शब्द 'वैष्णों देवी' का ही अपभ्रंश नाम है, क्षेत्रिय भाषा के अनुसार भगवती वैष्णवी देवी ही वैष्णों देवी के नाम से प्रसिद्ध हैं। जो श्रद्धालु भक्त वैष्णों देवी दर्शन करने जाते हैं। भगवती अपनी कृपा से उनकी समस्त मनोकामनाओं को पूर्ण करती हैं।

कलियुग के अन्त में भगवान विष्णु जब कल्कि अवतार लेंगे, उस समय यही भगवती वैष्णों देवी उनकी मुख्य शक्ति होंगी। उस समय ये दुष्टों का संहार करके संसार में धर्म की स्थापना तथा अधर्म का विनाश करेंगी।

—:०:—

वैष्णों देवी की भेंट

करने तपस्या आई मां वैष्णों
नारद लगन लगाई मां वैष्णों
गुफा में त्रिकूटा का दरबार
हो रही जय जय कार

राम चरणों में धुन लगाई
मां वैष्णों प्रभुराम को पाना
रत्नाकर घर जन्म हुआ था
देख के राजा प्रसन्न हुआ था
माता-पिता को छोड़ा राम से नाता जोड़ा
सरयू के तट पे आई मां वैष्णों...

मारने रावण को राम जब आये
वैष्णों ने उनके दर्शन पाये
इच्छा प्रभु ने जानी मिलने की बात बखानी
कर लूं लंका चढ़ाई मां वैष्णों...

सीता पाके प्रभु जब आये
भेष बदल वैष्णों कुटिया धाये

राम विरह में चैन न पाया
चरणों में गिरके बोली महामाया
कैसे तुमको पाऊंगी तुम बिन ना रह पाऊंगी
बनो जीवन सहाई मां वैष्णों...

राम बोले उनको धीर बंधाकर
पाऊंगा कलियुग में तुमको आकर
त्रिकुटा की घाटी जाओ तपस्या में खो जाओ
आशिष लेके आई मां वैष्णों...

तब से मां पिण्डी में लीन हुई है
राम राम रट लगी हुई है
अंग संग सरस्वती काली लक्ष्मी यश देने वाली
महिमा जग में फैलाई, मां वैष्णों...

कलियुग में वैष्णों की जगमग जोती
इच्छा सभी की यहां पूरी होती
है ये अवतार निराला बन जा इसका मतवाला
दुःख हरने आई मां वैष्णों...



श्री ज्वाला जी की शक्ति

पंजाब राज्य में जिला होशियारपुर के गोपीपुरा डेरा से लगभग दस मील की दूरी पर ज्वाला जी का मन्दिर है कहा जाता है कि सात बहनें, सात लपटों के रूप में यहीं रहती हैं यह लपटें पहाड़ी भूमि से निकलती हुई हैं और सदा प्रकाशमान और प्रज्वलित रहती हैं। इसी स्थान पर ज्वाला जी का मन्दिर बना हुआ है। यह धूमा देवी का स्थान कहलाता है।

कहा जाता है कि यहां पर सती की जिह्वा गिरी थी और यह स्थान ५१ शक्ति पीठों में आता है। इसलिए इसकी बहुत मान्यता है। दूर-दूर से भक्तजन यहां पहुंचते हैं और मनोकामना सफल करते हैं।

मुगल बादशाह अकबर ने जब ध्यानू भक्त के घोड़े का सिर जुड़ा देखकर ज्वाला देवी की मान्यता को स्वीकार किया और सवा मन सोने का छत्र लेकर मन्दिर में प्रतिष्ठा करने आये थे तो देवी ने प्रकट होकर उस छत्र के टुकड़े-टुकड़े कर न जाने उसे किस धातु में परिवर्तित कर अकबर का अहंकार मिटाया था। वह छत्र आज भी टुकड़ों के रूप में मन्दिर के समीप पड़ा है।

इस मन्दिर के समीप ही एक पानी का कुण्ड है

जिसे सूरज कुण्ड कहा जाता है। इस कुण्ड के पानी को बहुत पवित्र माना जाता है। भक्तजन पहले इस कुण्ड में स्नान करने के पश्चात् ही देवी के दर्शन करते हैं।

कहते हैं इस मन्दिर में गुरु ग्रन्थ साहिब की हस्त लिखित प्रति भी रखी हैं। इसलिए इसकी अधिक मान्यता है कि जिसका वर्णन शब्दों में करना असम्भव है। यहां से कुछ ही दूर पर निशान सादिब और गोरख टिब्बी नामक स्थान हैं। यह बहुत मनोहर है। इसकी रमणीक दृश्यावली बरबस ही मन को आकर्षित करती है।

यहीं पर लक्ष्मी देवी का मन्दिर अम्बकेश्वर महादेव रघुनाथ जी का मन्दिर अर्जुन नाम का स्थान, शीतला मन्दिर, सीताराम मन्दिर भगवान महावीर २४ अवतारों की मूर्तियां, भैरव, तारा देवी और अष्टभुजी माता का मन्दिर और टेढ़े मन्दिर आदि स्थानों के भी दर्शन कर भक्त अपनी मनोकामना सम्पूर्ण करते हैं।

इन मन्दिरों की इतनी मान्यता है कि यहां पर हर समय श्रद्धालु भक्तजनों का समूह रहता है भक्तजन अपनी श्रद्धा के अनुसार मन्दिरों के दर्शन करते हैं। यहां के मन्दिर व स्थान सबकी मनोकामनायें पूर्ण करने वाले हैं।

ज्वाला जी की भेंट

ज्वाला जी तेरी ज्योति जगे अखण्ड प्रकाश
माता जी तेरी ज्योति जगे।

अग्नि बिजली और सूरज में तेज तुम्हारा छाया
धरती और आकाश स्वर्ग में उजियारा फैलाया
एक ज्योति से तीन रूप हो जग में करो प्रकाश
ज्वाला जी तेरी...

शेष के मुख से निकली अग्नि सो पाताल में छाई
बड़वानल का रूप धारके सागर में लहराई
ज्वालामुखी पर्वत से प्रकटी पूजे सकल जहान
ज्वाला जी तेरी...

तारागण में तेज तुम्हारा चन्द्र चांदनी लावे
सूर्य किरण से तेज जो आवे फल और अन्न पकावे
मेघों में बिजली हो बरसती करे वर्षा जल धार
ज्वाला जी तेरी...

तेजवन्त जो जीव जगत में तेज तुम्हारा
अग्नि बिजली गैस भाप सब शक्ति का विस्तारा
तेज शक्ति सब ज्वाला तेरी जन सेवक बलिहार
ज्वाला जी तेरी...

नैना देवी की कथा

उत्तर भारत में पंजाब राज्य में भाखड़ा नांगल लाईन पर आनन्दपुर साहिब एक बड़ा भारी स्थान है। इस स्थान से उत्तर दिशा की ओर शिवालक की एक चोटी पर पीपल का वृक्ष है, कहा जाता है कि इस स्थान पर सती के नेत्र गिरे थे। इसलिए यह शक्ति पीठों में से माना जाता है। यहां पर भगवती नैनादेवी का मन्दिर भगवती मन्दिर के नाम से है। इस पहाड़ी की चढ़ाई लगभग १२ किलोमीटर है।

इस मन्दिर के बारे में कई कथायें प्रसिद्ध हैं लेकिन निम्नलिखित कथा प्रमाणित मानी जाती है।

इस पहाड़ी के समीप के इलाके में कुछ गूजरों की आबादी रहती थी। उसमें नैना नाम का गूजर देवी का परम भक्त था, वह अपने गाय भैंस आदि पशुओं को चराने के लिए इस पहाड़ी पर आया करता था। इस पर जो पीपल का वृक्ष अब भी विराजमान है उसके नीचे आकर नैना गूजर की एक अनब्याही गाय खड़ी हो जाती और उसके स्तनों से अपने आप दूध निकल पड़ता।

नैना गूजर ने यह दृश्य कई बार देखा। वह यह देखकर सोच-विचार में डूब जाया करता था कि आखिर एक अनब्याई गाय के थनों में इस पीपल के पेड़ के नीचे

आकर दूध निकल जाता है। अतः एक बार उसने उस पीपल के पेड़ के नीचे जाकर जहां गाय का दूध गिरता था वहां पड़े सूखे पत्तों के ढेर को हटाना आरम्भ कर दिया। पत्ते हटाने के बाद उसमें उसे दबी हुई पिण्डी के रूप में मां भगवती की प्रतिमा दिखाई दी।

नैना गूजर ने जिस दिन पिण्डी के दर्शन किए उसी रात स्वप्न में उसे मां भगवती ने दर्शन दिए और कहा कि मैं आदि शक्ति दुर्गा हूँ, तू इसी पीपल के नीचे मेरा स्थान बनवा दे। मैं तेरे ही नाम से प्रसिद्ध हो जा ंगी।

नैना मां भगवती का परम भक्त था। उसने प्रातः काल उठते ही देवी मां की आज्ञानुसार उसी दिन से मन्दिर का निर्माण शुरू करवा दिया।

मन्दिर कुछ ही दिनों में बनकर तैयार हो गया और शीघ्र ही उसकी महिमा चारों तरफ फैल गई और श्रद्धालु भक्तजन दूर-दूर से इस स्थान पर मां भगवती के दर्शनों को आने लगे। देवी के भक्तों ने अपनी सामर्थ्यानुसार वहां पर मां भगवती का सुन्दर भव्य व विशाल मन्दिर बनवा दिया समीप ही एक गुफा भी है जिसे नैना देवी की गुफा कहते हैं। भक्त इसके भी दर्शन करने आते हैं।

नैना देवी की भेंट

तेरा अद्भुत रूप निराला आजा मेरी नैना माई ए
तुझ पे तन-मन धन सब वारूं आजा मेरी नैना माई ए

सुन्दर भवन बनाया तेरा तेरी शोभा न्यारी
नीके २ खम्बे लागे अद्भुत चित्तर कारी
तेरा रंग बिरंगा द्वारा ॥ आजा...

झांझा और मृदंगा बाजे और बाजे शहनाई
तुरई नगाड़ा ढोलक बाजे तबला शब्द सुनाई
तेरे द्वार पे नौबत बाजे ॥ आजा...

पीला चोला जरद किनारी लाल ध्वजा फहराये
सिर लालोंका मुकुट बिराजे निगाह नहीं ठहराये
तेरा रूप न बरना जाये ॥ आजा...

पान सुपारी ध्वजा नारियल भेंट तुम्हारी लाये
बालक बूढ़े नर नारी की भीड़ खड़ी तेरे द्वारे
तेरी जय जयकार मनावे ॥ आजा...

कोई गाये कोई बजाये कोई ध्यान लगाये
कोई बैठकर तेरे आंगन नाम की टेर लगाये
कोई नृत्य करे तेरे आगे ॥ आजा...

कोई मांगे बेटा बेटी कोई कंचन की माया
कोई मांगे जीवन साथी कोई सुन्दर काया
भक्त सदा तेरी कृपा मांगे ॥ आजा...

माता चिन्तपुरनी की कथा

जिस स्थान पर चिन्तपुरनी का मन्दिर है, ऐसी मान्यता है कि यहां पर सती के चरण गिरे थे। इसलिए यह स्थान शक्ति पीठों में आते हैं।

यहां पर चैत्र और क्वार की नवरात्रियों में और श्रावण की अष्टमी को भारी मेले भरते हैं जिनकी इतनी मान्यता है कि लोग दूर-दूर से इस मेले में भाग लेने के लिए आते हैं।

होशियारपुर से कुछ दूर भरवाई नामक स्थान है। भरवाई के बस स्टैण्ड से लगभग दो ढाई मील की दूरी पर चिन्तपुरनी देवी का मन्दिर है। यहां पर श्रद्धालु भक्त अपनी २ श्रद्धानुसार देवी की मूर्ति बनाकर प्रतिष्ठित करते हैं। इस प्रकार की सैकड़ों मूर्तियां यहां पर देखने को मिलती हैं, यह काफी रमणीक और दर्शनीय स्थान है। भक्तजन यहां पर पहुँचकर देवी के दर्शन कर अपने चित्त की इच्छाओं की पूर्ति करते हैं क्योंकि यह देवी चित्त की इच्छाओं को पूर्ण करने वाली है।

माता चिंतपुरनी देवी की भेंट

चिंतपुरनी चिन्ता दूर करनी जन को तारो भोली मां

काली दा पुत्र पवन दा घोड़ा ।
सिंह पर भई असवार भोली मां ॥ चिंतपुरनी०

एक हाथ खड्ग दूजे में खांडा ।
तीजे त्रिशूल सम्भाले भोली मां ॥ चिंतपुरनी०

चौथे हाथ चक्र गदा पांचवे ।
छठे मुण्डों दी माल भोली मां ॥ चिंतपुरनी०

सातवें से चण्ड मुण्ड बिदारे ।
आठवें से असुर संहारे भोली मां ॥ चिंतपुरनी०

चम्पे का बाग लगा अति सुन्दर ।
बैठी दीवान लगाय भोली मां ॥ चिंतपुरनी०

हरिहर ब्रह्मा तेरे भवन विराजे ।
लाल चंदोया बैठी तान भोली मां ॥ चिंतपुरनी०

औखी घाटी विकटा पैंडा ।
तले बहै दरिया भोली मां ॥ चिंतपुरनी०

सुमर चरण ध्यानू जस गावे ।
भक्तां दी पैज निभाओ भोली मां ॥ चिंतपुरनी०



मनसा देवी की कथा—

वैसे तो इस देवी के बारे में बहुत-सी कथायें प्रचलित हैं। परन्तु निम्नलिखित कथा प्रमाणिक मानी जाती है। मुगल सम्राट अकबर के समय की बात है कि चण्डीगढ़ के पास मनीमाजरा नामक स्थान है जहाँ पर अब मनसा देवी का मन्दिर स्थित है एक राजपूत जागीरदार के आधीन जागीर थी, अकबर सम्राट जागीरदारों व कृषिकों से लगान के रूप में अन्न वसूल करता था।

एक बार प्रकृति के प्रकोपवश फसल बहुत कम हुई। जिससे राजपूत जागीरदार वसूली देने में असमर्थ रहे। इसलिए उन्होंने अकबर से लगान माफ करने की प्रार्थना की यद्यपि मुगल सम्राट अकबर काफी अच्छा बादशाह था परन्तु उन जागीरदारों की बातों की ओर कोई ध्यान नहीं दिया और क्रोधित होकर उन सब जागीरदारों को कैद करवा दिया।

उनके इस प्रकार गिरफ्तार हो जाने का समाचार शीघ्र ही चारों तरफ फैल गया। तब दुर्गा के एक भक्त कवि गरीबदास ने दुर्गा जी की पूजा और हवन का आयोजन किया। देवी माता प्रसन्न हुई और प्रकट होकर उससे बोली—तुम्हारी क्या इच्छा है ?

इस पर कवि गरीबदास ने कहा—माँ आप कृप कर उन निर्दोष जागीरदारों को मुक्त करवा दो। मात ने प्रसन्न होकर गरीबदास को आशीर्वाद दिया और वहां से अन्तर्ध्यान हो गयीं।

कुछ समय तक अकबर की अदालत में मुकदमा चला और सब जागीरदार मुकदमा जीत गए और काजी द्वारा उस वर्ष का लगान माफ हो गया।

सब जागीरदार प्रसन्नचित जब अपने २ घरों को वापिस लौटे तो उन्हें सारी बात का पता चला। तब उन सबने मिलकर वहां एक मन्दिर बनवा दिया जो कि मनसा देवी अर्थात् मन्शा (इच्छा) को पूर्ण करने वाली के नाम से विख्यात हुआ।

जब वह मन्दिर स्थापित हो गया तो एक दिन महाराज पटियाला जो कि देवी के बहुत बड़े भक्त थे उन्हें स्वप्न में देवी ने दर्शन दिये और कहा कि मैं मनीमाजरा नामक स्थान पर प्रकट हुई हूँ। इसलिए तुम वहां एक मन्दिर बनवाकर पुण्य लाभ अर्जित करो।

महाराज पटियाला ने तुरन्त देवी की आज्ञा का पालन किया और मनीमाजरा में उस मन्दिर के साथ एक और विशाल मन्दिर बनवाया जो कि मनसा देवी के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

इस मन्दिर पर चैत्र की नवरात्रि को बहुत भारी मेला लगता है जिसमें भाग लेने के लिए भक्त लोग दूर-दूर से आते हैं और अपनी मनोकामनाओं की पूर्ति करते हैं वैसे मन्सा देवी की मान्यता का सबसे बड़ा कारण है कि वह शक्ति पीठों में है एक ऐसा माना जाता है कि यहां सती का मस्तक गिरा था।

मनसा देवी का मन्दिर चण्डीगढ़ के समीप ही मनीमाजरा नामक स्थान पर है जिसके लिए चण्डीगढ़ से हर वक्त हर प्रकार के वाहन मिलते हैं। श्रद्धालु भक्त जन अवश्य ही मनसा देवी के दर्शन कर अपने जीवन को सफल करते हैं।

मनसा देवी के नाम से ही एक मन्दिर हरिद्वार में शिवालिक पर्वत की एक चोटी पर भी है। इसकी गणना शक्ति पीठों में तो नहीं लेकिन वर्तमान में इसकी मान्यता भी बहुत बढ़ रही है। हरिद्वार जाने वाले यात्री अवश्य ही इसका दर्शन करते हैं और मनोकामना की सिद्धि के लिये पास ही के एक वृक्ष पर ओंधी बांधते हैं। लगभग एक किलोमीटर की चढ़ाई पर यह मन्दिर बना है।

—:०:—

मनसा देवी की भेंट

मनसा देवी बिना तुम्हारे मनसा पूरी कौन करे।
मात तात सुत सुने न कोई मनके दुखड़े कौन हरे॥
मां २ फिरके हार गया मैं चरण पड़ा अब तेरे।
मनसा देवी बिना तुम्हारे···

बिन पर पंछी मां को जैसे भूखे बछड़े की गति जैसे।
स्वाति आग में मगन पपीहा निशदिन ध्यान धरे॥
मनसा देवी बिना तुम्हारे···

बड़ावनल जलजीव जलावे मत तन तृष्णा तीव्र सतावे।
वास करो आ घट में जगजननी जावे जीवन शोक हरे॥
मनसा देवी बिना तुम्हारे···

सिंहवाहिनी कर खड्ग सुहावे भाल शील सम शोभा पावे।
मां मनसा तेरे बिन कौन पूरन मनसा आन करे॥
मनसा देवी बिना तुम्हारे···



श्री बाला सुन्दरी की कथा

कहा जाता है कि मुजफ्फर नगर जिले का निवासी देवी का भक्त एक वैश्य नमक बेचने का व्यवसाय करता था। एक समय वह अपने व्यवसाय के सम्बन्ध में नाहन रियासत की ओर गया। जब वह त्रिलोकपुर में पहुँचा तो भगवती ने उसके नमक से ही प्रकट होकर उसे प्रत्यक्ष दर्शन दिये। इस प्रकार माता के दर्शन पाकर वह वैश्य कृतार्थ हो गया। दिन में उसे अपने धन्धे से पर्याप्त लाभ हुआ। रात्रि के समय भगवती ने स्वप्न में यह आदेश दिया कि इसी स्थान पर सामर्थ्य के अनुसार मेरा एक मन्दिर बनवा दे तो मेरी कृपा से तेरे सभी मनोरथ पूर्ण होंगे।

प्रातःकाल जगने पर उस वैश्य ने स्वप्न में प्राप्त माँ के आदेशानुसार त्रिलोकपुर में ही जगदम्बा का एक छोटा सा मन्दिर बनवा दिया। वह मन्दिर माता 'बाला सुन्दरी देवी' के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

कुछ ही दिनों में उस मूर्ति के चमत्कारों की प्रसिद्धि दूर २ तक फैल गई। तब एक बार नाहन रियासत के महाराजा भी उसके दर्शनों के लिए आये। उन्होंने वहाँ

पर माता के भवन को और अधिक सुन्दर बनवा दिया। वह मन्दिर 'त्रिलोकपुर वाली माता' के नाम से प्रसिद्ध है जो श्रद्धालु भक्त त्रिलोकपुर वाली माता बाला सुन्दरी के दर्शन करते हैं उनकी मनोकामना पूर्ण होती हैं।

—:o:—

बाला सुन्दरी की भेंट

मेरी अम्बा बाला सुन्दरी गावें तेरी जय जय ॥ टेक

अड़तालीस कोस का बना जलन्धर जिसमें भवन बनाया।
सभी देवता सगरे देवा माता ने वेग बुलाया ॥ मेरी०

ब्रह्मा जी को आज्ञा दीनी चारों वेद सुनाओ।
यजुर्वेद, ऋग, सामवेद और अथर्ववेद सुनाओ ॥ मेरी०

रामचन्द्र को आज्ञा दीनी धर्म की नींव टिकाओ।
शिव शंकर को आज्ञा दीनी योग मार्ग बतलाओ ॥ मेरी०

पांडुराय को आज्ञा दीनी नीका भवन बनाओ।
अर्जुन जी को आज्ञा दीनी सुवरन छत्तर चढ़ाओ ॥ मेरी०

हाथ जोड़कर करूं विनती सुनलो सांवल माई।
ध्यानू जी बनिये का गावे हम बालक तुम माई ॥ मेरी०

—o—

कोट कांगड़े वाली देवी की कथा

माता के शक्तिपीठों की मान्यता बहुत ही अधिक है मां की शक्ति और प्रताप से भक्तजन वैसे ही खिंचे चले आते हैं जैसे चुम्बकीय आकर्षण शक्ति के सामने लोहा खिंचा चला आता है। श्रद्धालु भक्तजन अपनी पूरी २ श्रद्धा से मां की स्तुति करते हैं और मां अपने भक्तों की सभा मनोकामनायें पूर्ण करती हैं और उन्हें मनवांछित फल प्रदान करती हैं।

नगरकोट धाम में सती के स्तन गिरे थे। ऐसी मान्यता है। यहां पर भगवती ब्रजेश्वरी देवी के नाम से निवास करती हैं और देवी कोट कांगड़े वाली के नाम से प्रसिद्ध है। इस मन्दिर में माता के अतिरिक्त महावीर तथा भैरों की अति सुन्दर मूर्तियां भी स्थापित हैं। दूर २ से श्रद्धालु जन इस मन्दिर को देखने आते हैं और अपनी मनोकामनायें पूर्ण करते हैं।

यहां पर एक तारा देवी का मन्दिर है जो कि भूचाल आने पर भी नहीं गिरा था। माता के चमत्कार से इस स्थान की महत्ता और अधिक बढ़ गई।

—।०।—

कोट कांगड़े वाली मैया की भेंट

किला कांगड़ा तेरा मां आन मुगलों ने घेरा मां
किला कांगड़ा तेरा मां…

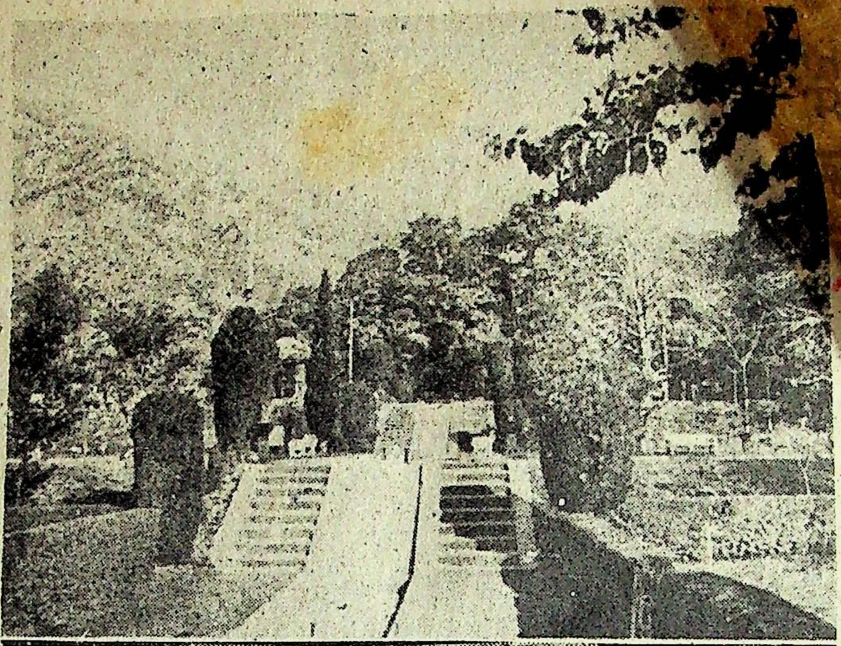
नगर कोट की आदि भवानी मुगल तुरक ने नहीं मानी
तवे जड़ाये नहर मंगाई लाया भवन पे डेरा मां
किला कांगड़ा तेरा मां…

तवे फोड़ मैया परचण्डी मुगलां भाग गए पगडण्डी
फूंक दिया सब डेरा मां किला कांगड़ा तेरा मां
किला कांगड़ा तेरा मां…

भागे मुगल आई शरनाई भरम भुलाना बख्शो माई
फेर ना पावां फेरा मां किला कांगड़ा तेरा मां
किला कांगड़ा तेरा मां…

झूले झण्डे लाल निशाने माता पहने कुसमड़े बाने
ध्यानू चाकर तेरा मां किला कांगड़ा तेरा मां
किला कांगड़ा तेरा मां…





शालीमार पार्क वैष्णों देवी

देवी के अन्य मन्दिर

इन नौ महा मन्दिरों के अतिरिक्त सर्वत्र भारत में देवी के अन्य कई और मन्दिर भी पाये जाते हैं। इनकी महानता भी भक्तों के दिल में कम नहीं है। यूं तो कण-कण में शक्ति का वास है और घर-घर में देवी के असंख्य मन्दिर हैं परन्तु उसमें भी जो मुख्य माने गये हैं वह इस प्रकार हैं।

१. बगलामुखी देवी का मन्दिर—यह दो दर्शनीय मन्दिर पंजाब राज्य में हैं। एक तहसील नरपुर के कोटला नामक स्थान में है दूसरा तहसील गोपीपुर डेरा के बन खण्डी नामक स्थान में है।

२. ज्वाला देवी—कहा जाता है कि यहां पर सती के हाथ गिरे थे। यहां पर ज्वाला देवी का प्रकाश सदा विद्यमान रहता है। इसको भगवती हिंगलाज का सिद्ध

स्थान भी कहते हैं। यह करांची की मकरान पहाड़ियों में है।

३. कामख्या देवी—यह मन्दिर आसाम में है और ब्रह्मपुत्र नदी के तट पर गोहाटी से लगभग ५ मील की दूरी पर स्थित है। कहा जाता है कि यहां भगवती की कोख गिरी थी। नीलांचल पर्वत पर स्थित यह मन्दिर भगवती कामाख्या देवी के नाम से जाना जाता है। यहां पर तान्त्रिक लोग अपनी साधना को सफल बनाते हैं।

४. शाकुम्भरी देवी—भारत के सबसे बड़े प्रान्त उत्तर प्रदेश में सहारन पुर नगर से लगभग २५ मील दूर शिवालक की पर्वत मालाओं में यह मन्दिर है। इस मन्दिर की प्रतिमा के दांई ओर भीम तथा भ्रामरी तथा बांई ओर शीताची देवी प्रतिष्ठित हैं। शीताची देवी को शीतला देवी के नाम से भी जाना जाता है।

५. योग माया अर्थात् चीर भवानी—काश्मीर की राजधानी श्रीनगर से उत्तर की ओर लगभग १५ मील

की दूरी पर शारदा नामक स्थान है। यहां सिन्धु नदी के तट पर क्षीर भवानी अर्थात् योग माया का विशाल मन्दिर है।

६. नरसिंही का मन्दिर—चम्बा राज्य के कश्मीर नामक स्थान (ब्राह्मपुर का अपभ्रंश है) पर भगवती नरसिंही का विशाल मन्दिर है।

७. भगवती पार्वती का मन्दिर—दक्षिण में कन्या कुमारी के तट पर भगवती पार्वती का यहां विशाल मंदिर स्थित है।

८. सिद्धेश्वर, संकटा, राजराजेश्वरी और अन्नपूर्णा देवी के मन्दिर—यह चारों मंदिर उत्तर प्रदेश के वाराणसी नामक शहर में हैं।

९. विन्ध्यवासिनी देवी का मन्दिर—विन्ध्याचल पर्वत पर उत्तर प्रदेश के मिर्जापुर जिले से लगभग ६ मील दूर विन्ध्यवासिनी देवी का विशाल मन्दिर है। हर साल यहां पर एक विशाल मेला लगता है।

१०. भुवनेश्वरी देवी—सौराष्ट्र में गोण्डल नामक स्थान पर देवी का विशाल मन्दिर स्थित है।

११. दधिमथि देवी—यह विसाल मन्दिर राजस्थान के नागौर नामक स्थान में है।

१२. उकिनी देवी का मन्दिर—यह विशाल मंदिर उत्तर प्रदेश के नैनीताल जिले के काशीपुर नामक नगर में स्थित है।

१३. नन्दा देवी का विशाल मन्दिर—नन्दा पर्वत पर है।

१४. कौशिकी देवी—उत्तर प्रदेश के अल्मोड़ा शहर से लगभग आठ मील की दूरी पर शौशिकी देवी का मन्दिर स्थित है।

१५. अर्बुदा देवी—यह मन्दिर राजस्थान के प्रसिद्ध आबू पर्वत पर स्थित है।

१६. हरसिद्धि देवी—यह विशाल मन्दिर मध्य प्रदेश के प्रसिद्ध हिन्दू तीर्थ उज्जैन शहर में है जहां कुम्भ का मेला लगता है।

१७. सिंहवाहिनी क्षेमरी देवी—यह मन्दिर इन्दौर हरदा मार्ग पर कन्नौज नामक स्थान पर स्थित है।

१८. नर्वदा के तट पर ओंकारेश्वर स्थान पर सात देवियों के प्रसिद्ध मन्दिर हैं जिनकी मान्यता दूर-दूर तक है। इन सातों देवियों के मन्दिरों के नाम इस प्रकार हैं—माहेश्वरी, कौमारी, ब्राह्मी, वैष्णवी, वाराही, इन्द्राणी, चामुण्डा।

इन सातों देवियों के मन्दिर एक साथ होने पर ओंकारेश्वर का नाम विश्व भर में प्रसिद्ध है और देश के कौने २ से लोग इनके दर्शनों को आते हैं।

१९. महालक्ष्मी का मन्दिर—यह मन्दिर महाराष्ट्र के कोल्हापुर नामक शहर में है।

२०. काली देवी—कलकत्ता में काली देवी का विशाल मन्दिर है। कहा जाता है कि यहां पर सती के केश गिरे थे। यहां पर रक्ताम्बर, मुण्डमालिनी तथा मुक्तकेशी देवियां प्रसिद्ध हैं।

२१. उत्तर प्रदेश के मथुरा जिले में देवियों के तीन मन्दिर हैं जिनकी बहुत मान्यता है और भक्तजन यहां पर देवी की आराधना कर मनवांछित फल पाते हैं। यह मन्दिर निम्नलिखित हैं—महाविद्या देवी का मन्दिर, महामेधा देवी का मंदिर, महामाया देवी का मंदिर है।





भवानी पुस्तक महल

कटरा-182301